@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

उत्साह, उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में,
उल्लास विजय का हँसता
मेरे मतवाले मन में।

-सुभद्रा कुमारी चौहान

वर्ष : 2 अंक : 7 अक्टूबर : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

जीवन एक उत्सव

विशेषांक

चाय पर चर्चा

आयें साथ बढ़ाएं हाथ

जन-संदेश

पुलिसकर्मियों के काम के घंटे तय किए जाएं, जिस तरह हर दफ्तर में 8 घंटे ड्यूटी का समय होता है उसी तरह 8 घंटे की ड्यूटी यदि पुलिसकर्मियों की हो और साप्ताहिक अवकाश भी तो यकीनन यह न केवल देश और प्रदेश के लिए अच्छा होगा बल्कि तमाम मुश्किलों के बीच पुलिसकर्मियों के लिए यह बेहद सकारात्मक पहल होगी। निजी सुरक्षाकर्मियों को भी बेहतर सुविधाएं प्रदान की जाएं, और अपनी यथासंभव कोशिश से इन्हें न केवल संबल प्रदान करें बल्कि इनका जीवन भी बेहतर बनाने में मदद करें..

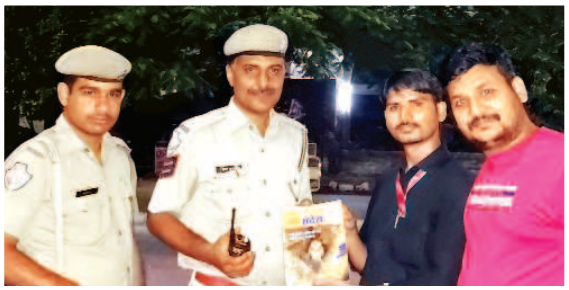

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन, सर्कुलेशन मैनेजर राजेन्द्र कुमार शर्मा, सहयोगी साथी नवीन कानूनगो ने जयपुर शहर में पुलिसकर्मियों व निजी सुरक्षाकर्मियों के साथ रात्रि 11:00 बजे से रात्रि 3:00 बजे तक चाय पर चर्चा की। माही संदेश की इस पहल का श्रेय साथी नवीन कानूनगो व उनकी धर्मपत्नी शिवांगिनी कानूनगो को जाता है, जिन्होंने इस सार्थक पहल का न केवल विचार रखा बल्कि इसे मूर्त रूप देने में भी सहयोग किया।

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	डॉ. मदनलाल शर्मा*
संरक्षक-सलाहकार	सुधीर माथुर*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
सह-संपादक	नित्या शुक्ला* ममता पंडित* डॉ. महेश चंद* वंदना शर्मा* मधु गुप्ता*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)	रमन सैनी* 9717039404
संवाददाता	दीपक कृष्ण नंदन* ईशा चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हैड	अनुराग सोनी* 9828198745 राजपाल सिंह* 9413955958
कानूनी सलाहकार	शिव कुमार अवार*
सर्कुलेशन मैनेजर	आर.के. शर्मा* (मुम्बई)

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन*
डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक मंडल	रामेश्वरी देवी*
डिजाइनिंग	सागर कम्प्यूटर 79765-17072
मुद्रण	कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
mahisandesh31@gmail.com
मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

कल नहीं आज में जीयें तो बनेगी ज़िंदगी उत्सव

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

जीव में जीवटता है तो उत्सवों का मेला बन जाता है यह जीवन। हम आगे बढ़ें, बेहतर गढ़ें अच्छा पढ़ें। बहुत कम लोग ही मिलते हैं जो आज में जीते हैं, कल की परवाह करना गलत नहीं है लेकिन कल के लिए आज को खो देना उचित नहीं। आपके लिए सफलता या खुशी का पैमाना क्या है, सबसे पहले यह निर्धारित कीजिए। पैसा, अच्छी नौकरी, बड़ा घर या आजकल सोशल मीडिया पर बहुत से दोस्त, ये सब आपको क्षणिक खुशी दे सकते हैं, लेकिन याद करिए वो पल जब आप खुलकर मुस्कराए हों या जब आपकी आंखों में खुशी के आंसू आए हों, कोई भी भौतिक संसाधन आपको वो खुशी नहीं दे सकते जो आपको पहली बार अपनी संतान को गोद में लेकर मिली होगी। सार यह है कि हम जीवन में ऐसे पल बढ़ाएं जो हमें आत्मीयता से भरपूर खुशी दें। अपने पुराने दोस्तों से मिलिए, सिर्फ नौकरी में मत उलझे रहिए कुछ वक्त अपने परिवार के साथ खासकर बच्चों और बुजुर्गों के साथ बिताइए, दिन भर में कम से कम एक ऐसा कार्य अवश्य करिए जो आपकी पसंद का हो, अपनी पसंद का गाना सुन लीजिए, अपनी पसंद की किताब पढ़ लीजिए। अक्सर असफलता से भी सामना होता है तो घबराएं नहीं, जब हम सफलता का उत्सव मना सकते हैं तो असफलता का क्यों नहीं, असफलताएं भी हमें बहुत सा ज्ञान सिखाकर जाती हैं तभी तो हम सफल बन पाते हैं। आपाधापी और भागदौड़ भरे जीवन में थोड़ा ठहराव लाइए ताकि आप इस जीवन के खूबसूरत पलों को महसूस कर सकें। ये बेशकीमती ज़िंदगी जो हमें मिली है वो बेहद खूबसूरत है। वादा कीजिए कि ज़िंदगी को उत्सव बनाएंगे और हर लम्हे में मुस्कराएंगे... सब बातों की एक बात है 'ज़िदगी बड़े काम की चीज़ है, इसके हर पल को दिल से जीयें।

शेष फिर...

एक नजर यहां भी

जीवन परिचय
...तो ज़िंदा हो तुम — ममता पंडित — 6
किताबों की दुनिया
नीरज गोस्वामी की कलम से — नीरज गोस्वामी — 7
ज़िंदगी ख़ादानुसार
आइए, विम्मो की ज़िंदगी की बात करते हैं.... — नित्या शुक्ला — 8
जीवन उमंग
जीवन का उत्सव मनाते हैं कृष्ण — डॉ. स्वप्निल यादव — 9
जीवन उत्सव
युवा योगेश की मेहनत लाई रंग
खेतों से उगलने लगा सोना — रचित सतीजा — 10
जीवन के रंग
हर क्षण ही है उत्सव — वर्तिका अग्रवाल — 11
जीवन रेखा
सकारात्मक दृष्टिकोण ही उत्सव है — गोपेश दुबे (बिस्कोहर) — 12
जीवन आनंद
नवरात्रि — अभिषेक यादव — 13
जीवन धारा
प्रेमचन्द की कहानी रामलीला — डॉ. महेश चन्द — 14
जीवन दर्शन
जीवन एक उत्सव — गिरधारी विजय — 15
जीवन संवाद
ज़िंदगी उत्सव है इसे जीना सीखें — शिवकुमार 'अवार' फौजदार — 16
गतिविधियां — 17
कर्म पथ
जो पसंद है वही करें तो मिलेगी सफलता — रोहित कृष्ण नंदन — 18
सुनो सरकार
विज्ञानहत मानव — गंगाराम — 20
जनता कैसे मनाए जीवन का उत्सव — दीपक कृष्ण नंदन — 21
कथा संदेश — डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा — 22
काव्य-कलम — 24
सिनेमा संदेश
'आहें भरीं, पर शिकवे न किए' कल्याणी बाई — शिशिर कृष्ण शर्मा — 26
सलाम
जीवन से प्रेम करें-उर्मिला गोस्वामी — रोहित कृष्ण नंदन — 30

आवरण चित्र - वीनू मित्तल*

गुरुग्राम में जन्मी व वर्तमान में जयपुर निवासी वीनू बचपन से ही फोटोग्राफी का शौक रखती हैं और दुनिया को 'अपने ही अंदाज़ में अपने लेन्स से कैद' करने के सपने को पूरा करने का प्रयास कर रही हैं।

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 11000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। **रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।**

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान
ईमेल-
mahisandesh31@gmail.com
Mob. & whatsapp - 9887409303

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी व समाज के विभिन्न वर्गों तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 60,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 7,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 4,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

जीवन मिला है तो इसे उत्सव बनाएं...

सुधीर माथुर
संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश
mathursudhmat@yahoo.co.in

जीवन की असली खुशी इसमें नहीं है कि हम क्या प्राप्त करते हैं जीवन का वास्तविक आनंद तो इसमें है कि हम जीवन को क्या देते हैं। कई बार हम छोटी-छोटी खुशियां इसलिए जीना छोड़ देते हैं क्योंकि हम बड़ी खुशियों के लिए लालायित रहते हैं और जब यह बड़ी-बड़ी खुशियां हम से दूर जाने लगती हैं तो हमें अहसास होता है काश जो छोटी खुशियां हमारे बिल्कुल करीब थीं उन्हें अपना लेते। जीवन की सच्चाई यही है कि इसके हर पल को उत्सव मानकर जिएं, अगर आपने जीवन जीने की कला को अपना लिया यकीन मानिए आपने जीवन को समझ लिया, 'माही संदेश' पत्रिका को आपका स्नेह लगातार मिल रहा है, धीरे-धीरे देश भर से पाठक-लेखक हमसे जुड़ रहे हैं। हमारी मेहनत रंग ला रही है, जीवन का यही तो उत्सव है, जब एक कदम बढ़ता है तो सैकड़ों कदमों की दूरी तय करने का हौसला अपने आप जहन में आ जाता है।

हमें तो बस कदम बढ़ाना है और हर मंजिल को अपना बनाते जाना है, क्योंकि जीवन तो अनवरत बहने का नाम है।

शायर कुमार नयन लिखते हैं कि

'मिले कभी भी तो करता है बात फूलों की
वो एक शख्स जो पत्थर के घर में रहता है'

आइए, प्रण लें कि हम जीवन को बोझ नहीं बल्कि उत्सव मानेंगे, यकीन मानिए जिस दिन हर व्यक्ति की सोच में जीवन, उत्सव रूप में उभर जाएगा जीवन की तस्वीर सुनहरी नज़र आएगी। आने वाले समय में हम माही संदेश और रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटी ट्रस्ट के जरिए जीवन को बेहतर बनाने से जुड़े कई सामाजिक प्रयास करेंगे, क्योंकि जीवन की बेहतरी के लिए किया गया प्रयास जीवन में उत्सव का सृजन करता है।

सुधीर माथुर

...तो जिंदा हो तुम

ममता पंडित
सह-संपादक
देवास (मध्य प्रदेश)
pandit.mamta@gmail.com

दिलों में तुम अपनी बेताबियाँ लेकर
चल रहे हो तो जिंदा हो तुम..
नज़र में ख्वाबों की बिजलियाँ लेकर
चल रहे हो तो जिंदा हो तुम..

ये पंक्तियाँ पढ़कर आपके जेहन में फरहान अख्तर की तस्वीर उभर आई होगी, और अगर मेरी तरह आपने भी ये फिल्म तीन-चार बार देखी है तो हो सकता है आपको उनकी खराश भरी आवाज भी सुनाई दे।

फिल्म याद नहीं आ रही है तो आपकी जानकारी के लिए बता दूं, फिल्म है 2011 में आई जोया अख्तर द्वारा निर्देशित फिल्म 'ज़िन्दगी न मिलेगी दोबारा'। यह फिल्म इसलिए यादगार है क्योंकि यह एक ऐसी फिल्म है जो तीन दोस्तों के जिंदगी के ताने बाने के बहाने हमें जीवन जीने का तरीका सिखाती है। कबीर (अभय देओल) की शादी होने वाली है और वह शादी से पहले अपने दो दोस्त इमरान (फरहान अख्तर) और अर्जुन (ऋतिक रोशन) के साथ एक यात्रा पर जाना चाहता है। इस यात्रा पर हर दोस्त एक ऐसा खेल चुनता है जिसके बारे में बाकी दोनों दोस्तों को नहीं पता है और इस यात्रा में हुए करार के अनुसार उन्हें ये खेल या एडवेंचर करना ही है वे मुँह नहीं फेर सकते।

प्रतीकों के माध्यम से फिल्म हमारे दिलों में छिपे हुए डर के बारे में बात करती है। क्या यह सच नहीं है कि हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्हें फिल्म के किरदारों की तरह ऊंचाई, गहराई या कुछ और है जिससे डर लगता है। लेकिन हम हमारे भीतर के इस डर का सामना नहीं करना चाहते। सुनने में अजीब लगता है लेकिन ये सच है कि हम 'डर से डरते हैं'। उस डर को अपने जेहन में पालते-पोसते रहते हैं और वो कब विकराल रूप धारण कर लेता है हमें पता ही नहीं चलता। असलियत ये है हमें कोई धक्का देने वाला चाहिए, गहरे पानी में या फिर हर उस चीज की ओर जिससे हम भयभीत हैं।

जैसा कि आप फिल्म में देखते हैं कि बस एक क्षण लगता है उस रेखा को पार करने में जो वास्तव हमारे भय की काल्पनिक देन हैं। गहरे पानी से डरने वाला अर्जुन कुछ ही पलों बाद समन्दर में गोते लगा रहा होता है। वह इस गहराई को पाकर खुश है और उतना ही खुश है इमरान भी हजारों फुट की ऊंचाई पर, जो कभी ऊंची इमारतों से नीचे झांकते हुए भी डरता था।

अपने अंतिम भाग में फिल्म बात करती है हमारे सबसे बड़े डर यानी इस जिंदगी को खोने के डर की। किसी ने लिखा है कि 'ज़िन्दगी मौत की तरफ बढ़ते हुए सफर का नाम है'। हम सब इस अटल सत्य से वाकिफ हैं, फिर भी हम इसका सामना नहीं करना चाहते। हमारी सारी तकनीकों का एक छिपा हुआ लक्ष्य है किसी तरह हमारी औसत आयु कुछ वर्ष और बढ़ जाये। इतनी बार बताए जाने के बावजूद भी हम ज़िन्दगानी में पल जोड़ने की कोशिश में रहते हैं पलों में ज़िन्दगी नहीं।

क्या हममें से कोई तैयार हो सकता हैं एक ऐसी दौड़ के लिए जिसमें बेलगाम खूंखार सांड आपके पीछे छोड़ दिए जाएंगे। आपको येन-केन-प्रकारेण बस अपनी जान बचानी हैं। सोच कर भी मुश्किल लगता है, मौत आपके पीछे भाग रही है और चुनौती है ज़िन्दगी चुनने की। इस फिल्म में यही कुछ पलों की ज़िन्दगी और मौत की जंग उसके किरदारों के आने वाले जीवन की कहानी बदल देती है।

कबीर अपनी सगाई और मंगेतर का दिल तोड़ कर अपने लिए वो ज़िन्दगी चुनता है जो वो चाहता है न कि वो जो उस पर थोपी जा रही थी। इमरान अपनी डायरी में लिखी कविताओं की किताब छपवाने को तैयार है। अब उसे इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या कहेंगे और अर्जुन जो पैसे कमाने की दौड़ मैं अपने प्यार को कहीं छोड़ आया था फिर उसकी तरफ लौटता है।

सार यही है कि किसी भी डर, धारणा या कुंठा की बेड़ियां जो हमें इस जीवन रूपी उत्सव को मनाने से रोकती उन्हें हमें काटना है। हमें वो ज़िन्दगी चुननी है, छीननी है और फिर जीनी है जो हम चाहते हैं। हमें ये समझना है आखिरी मंजिल की ओर बढ़ता हमारा ये सफर इतना शानदार होना चाहिए की जब मौत भी हमें लेने आये तो वो खुद हमारी ज़िदादिली पर शर्मिंदा हो। फिल्म की कहानी में और भी कई पहलू हैं, लेकिन सबका मिलाजुला सार यही है कि ये जिंदगी एक बार मिली है...इस खुल के और जी भर के जियो।

जब भी आप स्वयं को निराशा या असंमजस के क्षणों में घिरा पाएं एक बार यह फ़िल्म अवश्य देखें मुझे यकीन है आपको सही उत्तर, उम्मीद और जीवन को एक उत्सव की तरह जीने का हौसला मिलेगा।

हवा के झोकों के जैसे
आज़ाद रहना सीखो
तुम एक दरिया के जैसे
लहरों में बहना सीखो..
हर एक लम्हे से तुम
मिलो खोले अपनी बाहें
हर एक पल एक नया
समां देखे ये निगाहें..
जो अपनी दिलों में तुम अपनी
बेताबियाँ लेकर चल रहे हो
तो ज़िन्दा हो तुम...।

नोट : *फिल्म के कुछ चुनिंदा अंश YouTube पर व पूरी फिल्म AmazonPrimeVideo पर उपलब्ध हैं।*

नीरज गोस्वामी की कलम से

नीरज गोस्वामी
जयपुर, राजस्थान
मो. 98602-11911

दोस्तों पढ़ना और वो भी किताबें खरीद कर पढ़ना मेरा बरसों पुराना शौक रहा है। मैंने सोचा आप से उन ढेरों किताबों में से, चंद गज़लों की किताबों की चर्चा करूँ।

हम इस कड़ी की शुरुआत करेंगे ग़ज़लों की किताब 'सुबह की उम्मीद' से, जिसे लिखा है जनाब बी. आर. विप्लवी. ने। नयी पीढ़ी के लिए शायद विप्लवी जी का नाम अनजाना हो लेकिन ग़ज़ल प्रेमी जानते हैं कि उन्होंने गजल विधा में एक रचनात्मक हस्तक्षेप किया है। गजल की रूह तक उतरती इस संग्रह की गजलों ने पद्मश्री गोपालदास 'नीरज' को यह लिखने को बाध्य कर दिया कि 'अनेक गज़लकारों को गज़ल कहने का शऊर भी सिखाएगी'।

पैर फिसले, खताएं याद आयीं
कैसे ठहरे, ढलान लम्बी है
ज़िंदगी की जरूरतें समझो
वक्त कम है दुकान लम्बी है
झूठ,सच,जीत, हार की बातें
छोड़िये, दास्तान लम्बी है।

किताब की भूमिका में विप्लवी जी लिखते हैं कि 'काव्य या शायरी की दुनिया को जज़्बाती समझा जाता है इसलिए इसे अक्सर आनंद लेने या रस लेने का साधन समझा गया है। मैं इस बात को यूँ मानता हूँ यह दिल की खुशी आदमी की भावनाओं में झंकार पैदा करके भी मिलती है और उसे झकझोर करके भी। इसलिए इसमें वो ताकत है कि सोये लोगों को जगाये और आगे की लड़ाई के लिए तैयार करे। आज की कविता या शायरी की यह जरूरत भी है।

कलम करना था जिनका सर जरूरी
उन्हीं को सर झुकाए जा रहे हैं
सुयोधन मुन्सफी के भेष में हैं
युधिष्ठिर आजमाए जा रहे हैं
लड़े थे 'विप्लवी' जिनके लिए हम
उन्हीं से मात खाए जा रहे हैं।

लोकप्रिय शायर वसीम बरेलवी साहब ने इस किताब में लिखा है कि 'विप्लवी जी जिस प्रकार हिन्दी संस्कार के फूलों को उर्दू तेहज़ीब की खुशबू में बसने का प्रयत्न कर रहे हैं, उसने उनकी गज़लिया शायरी को लायके-तबज्जो बना दिया है'

मुझे वो इस तरह से तोलता है
मिरी कीमत घटाकर बोलता है
वो जब भी बोलता है झूठ मुझसे
तो पूरा दम लगा कर बोलता है
जुबां काटी, तआरुफ़ यूँ कराया
यही है जो बड़ा मुंह बोलता है।

'विप्लवी' जी की शायरी संसार की बुनियादी समस्याओं, अन्याय और शोषण के साथ जिन्दगी में फैली तमाम दुश्वारियों से भी मुठभेड़ करती है। जो सबसे घुट गया उस पर उनकी निगाह जाती है।'

...शेष पृष्ठ 23 पर

आइए, विम्मो की ज़िंदगी की बात करते हैं....

नित्या शुक्ला
सह-संपादक
इंदौर (मध्य प्रदेश)
nitshuk17@gmail.com

आइए, विम्मो की जिंदगी की बात करते हैं....या फिर कह लीजिए कमला ,सुशीला, माया कुछ भी नाम हो सकता है।

नाम में क्या रखा है?

पर इन नामों के पीछे जो किस्से हैं न वही जिंदगी की भेलपुरी को चटपटा बनाते हैं।

अरे जिंदगी भेलपुरी जैसी ही तो है मन किया तो चटनी बढ़ा ली। तीखा ज्यादा लग रहा है तो मीठा डाल लिया। और यह भेलपुरी जैसी ज़िंदगी जीने का नायाब तरीका मुझे किसी आध्यात्मिक गुरु ने नहीं विम्मो ने ही सिखाया है।

विम्मो अपनी चमकीली मुस्कुराहट के साथ जब भी मिलती है दिल के अंधेरे से कोने को रोशन कर जाती है। बातूनी नहीं है ज्यादा, पर कम शब्दों में सब कुछ बोल जाती है। काले-सफेद खिचड़ी से बाल, चेहरे पर पड़ी उम्र की लकीरें, सलीके से पिन अप की हुई सूती साड़ी, कद साढे 4 फीट से ज्यादा नहीं है पर जिंदगी जीने का अंदाज उसके कद से बहुत ऊँचा।

सारा दिन कॉलोनी के बच्चे उसके पीछे मौसी मौसी करते-करते भागते रहते हैं। रोजाना रात को खाने से पहले सबको इकट्ठा कर कहानी सुनाना उसकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा है।

आज विम्मो बहुत खुश थी उसने 50 साल की कमसिन उम्र में साइकिल चलाना जो सीख लिया था। बिल्कुल

एक बच्चे जैसी चहक रही थी। मुझे उसकी खुशी देखकर अपने नर्सरी स्कूल के बच्चे याद आ गए। बच्चे कैसे खुश हो जाते हैं न जब वह कोई नया खिलौना चलाना सीखते हैं। विम्मो भी अपनी साइकिल को बिल्कुल उसी तरह निहार रही थी जैसे नन्हा सा बच्चा एक नए पाए हुए खिलौने को निहारता है। मैंने कई बार बातों-बातों में विम्मो से उसके परिवार के बारे में पूछा था।

पर वह हर बार हँस कर टाल जाती थी। पर आज शायद वह बहुत खुश थी और जब आंके जाने का डर न हो तो इंसान बेफिक्र हो अपनी आप बीती सुना ही जाता है। वह अपने आप ही कहने लगी। 'आपको पता है मेरी शादी दिल्ली में हुई थी। मेरे पति का पालम में एक फ्लैट है और अपनी एक स्टेशनरी की दुकान है।'

शायद वह आज अपना किस्सा सुना कर स्वयं उस बीते वक्त से मुक्त होना चाहती थी। उसकी बातें सुनकर मुझे दुख के साथ-साथ आश्चर्य भी हुआ कि एक संभ्रांत परिवार की विम्मो के साथ ऐसा क्या हुआ कि वह आज यहाँ घर-घर झाड़ू और बर्तन का काम करने के लिए मजबूर हो गई।

वह फिर बताने लगी। 'शादी के बाद 5 साल तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चला। पर जब मेरे पति को पता चला कि मैं माँ नहीं बन सकती तो उसने मुझे एक रात बीच सड़क पर ले जाकर छोड़ दिया।'

मैं फिर अपने विचारों की दलदल घुसती चली गई। कितना बौना हो जाता है न हमारा समाज अपनी रूढ़ीवादी सोच के आगे एक ओर तो हम स्त्री के मातृ स्वरूप को पूजते हैं और दूसरी ओर अगर स्त्री में माँ बनने की क्षमता नहीं है तो वही स्त्री समाज और स्वयं के लिए अभिशाप बन जाती है।

विम्मो की बातों ने मुझे अपने विचारों से बाहर निकाला वह कह रही थी कि 'मुझे तो समझ नहीं आया था कि मैं क्या करूं? ज्यादा पढ़ी-लिखी भी नहीं थी।

माँ पिताजी को तो मैं शादी के बाद ही खो चुकी थी। इसलिए अपनी एक पहचान वाले की मदद से यहाँ आ गई और यहाँ आकर घर-घर झाड़ू पोछा बर्तन का काम शुरू किया।'

'कुछ दिन तक तो लगता था कि मुझसे ज्यादा दुःखी और कोई नहीं हो सकता। पर दुःख ज्यादा देर तक मनाओ न तो वह आपको जकड़ने लगता है, इसीलिए दुःख का साथ छोड़ मैंने इन बच्चों की खुशियों का दामन पकड़ लिया। इन बच्चों ने मेरी जिंदगी बदल दी। मैंने इन्हीं से पढ़ना लिखना सीखा और अभी उन्होंने ही मुझे यह साइकिल चलाना सिखाया है।'

मैं मन ही मन सोच रही थी कि आज साइकिल सीख कर विम्मो को लग रहा है कि वह खुद के पैरों पर खड़ी हो गई है। जबकि अपने पैरों पर तो वह तब ही से दौड़ रही थी जब उसके पति ने उसे 20 साल पहले छोड़ दिया था।

...शेष पृष्ठ 23 पर

जीवन का उत्सव मनाते हैं कृष्ण

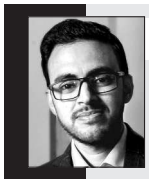

डॉ. स्वप्निल यादव
शाहजहांपुर
(उत्तर प्रदेश)
81769-25662

कृष्ण को जितना जानो कम है जितना पढ़ो वो भी कम। उसके बावजूद तमाम उल्लेख ऐसे हैं जो मन को रोमांचित कर देते हैं। कृष्ण जीवन एक बहुत बड़ा सन्देश है। लोहिया नास्तिक होकर भी कृष्ण के अस्तित्व पर शक नहीं करते बल्कि उन्हें कर्म का देवता मानते हैं। कृष्ण ने भारत को पश्चिम से पूरब में जोड़ा। लोहिया कहते हैं कि कृष्ण तो हर उस कर्म का आनंद लेना चाहते हैं जो एक साधारण मनुष्य करता है वह अपने देवत्व पर घमंड करने वाले देव हैं ही नहीं। कृष्ण की सभी चीजें दो हैं दो मां, दो बाप, दो नगर, दो प्रेमिकाएं या यों कहिए अनेक। जो चीज संसारी अर्थ में बाद की या स्वीकृत या सामाजिक है वह असली से भी श्रेष्ठ और अधिक प्रिय हो गई है। यों कृष्ण देवकीनन्दन भी हैं, लेकिन यशोदानन्दन अधिक। ऐसे लोग भी मिल सकते हैं जो कृष्ण की असली मां, पेट-मां का नाम न जानते हों, लेकिन बाद वाली दूध वाली, यशोदा का नाम न जानने वाला कोई निराला ही होगा। द्वारका और मथुरा की होड़ करना कुछ ठीक नहीं, क्योंकि भूगोल और इतिहास ने मथुरा का साथ दिया है। किन्तु यदि कृष्ण की चले तो द्वारका और द्वारकाधीश, मथुरा और मथुरापति से अधिक प्रिय रहे।

कान्हा को गोवर्धन पर्वत अपनी कानी उंगली पर क्यों उठाना पड़ा था? इसलिए न कि उसने इन्द्र की पूजा बन्द करवा दी और इन्द्र का भोग, खुद खा गया और भी खाता रहा। इन्द्र ने नाराज होकर पानी, ओला, पत्थर बरसाना शुरू किया, तभी तो कृष्ण को गोवर्धन उठाकर अपने गो और गोपालों की रक्षा करनी पड़ी। कृष्ण ने इन्द्र का भोग खुद क्यों खाना चाहा?

यशोदा मां, इन्द्र को भोग लगाना चाहती है, क्योंकि वह बड़ा देवता है, सिर्फ वास से ही तृप्त हो जाता है और उसकी बड़ी शक्ति है, प्रसन्न होने पर बहुत वर देता है और नाराज होने पर तकलीफ। बेटा कहता है वह इन्द्र से भी बड़ा देवता है, क्योंकि वह तो वास से तृप्त नहीं होता और बहुत खा सकता है और उसके खाने की कोई सीमा नहीं। यही है कृष्ण-लीला का रहस्य। वास लेने वाले देवताओं से खाने वाले देवताओं तक की भारत-यात्रा ही कृष्ण-लीला है। लोहिया ने जो कृष्ण के बारे में लिखा वो खुद एक शोध है।

अच्छा देखिये रसखान क्या कहते हैं-

सेस गनेस महेस दिनेस,
सुरेसहु जाहि निरंतर गावै।
जाहि अनादि अनंत अखण्ड,
अछेद अभेद सुबेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहे,
पचिहारे तू पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

कभी इसकी गहराई में जाकर देखिये कि ऐसा क्या था कि कृष्ण ने बाकी देवताओं को देखकर छाछ पीछे छुपा लिया और जब देवताओं ने कहा कि छाछ ही तो है दे दीजिए हमें भी इसके आगे आप अमृत को भी छोटा मान रहे हैं तो कृष्ण रोने लगे और कहा पता है यह छाछ मुझे ऐसे ही नहीं मिला बल्कि इसको पाने के लिये मुझे नाच दिखाना पड़ा तब यह छाछ मिला।

यही कृष्ण चरित्र है जो पूर्ण है और कृष्ण जीवन का यही सन्देश है कि जीवन का पूर्णता से आनंद लो इसमें अहम् के लिए जगह ही नहीं है, वरना तीनों लोकों का स्वामी छाछ के लिए गोपियों को नृत्य नहीं दिखाता।

किसानों की आय दुगनी करने के हुक्मरानों के वायदे बेशक खोखले हों परंतु एक साधारण युवक ने यह करिश्मा कर दिखाया है।

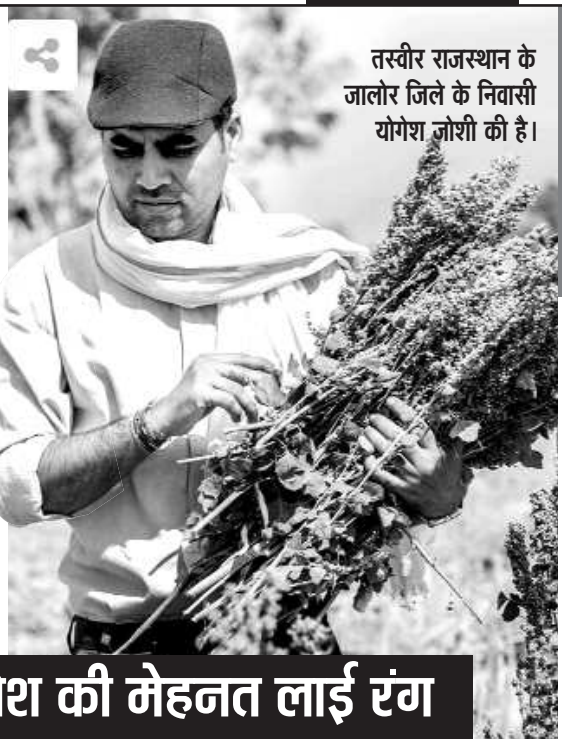

तस्वीर राजस्थान के जालोर जिले के निवासी योगेश जोशी की है।

2009 में मात्र 10 लाख की सालाना टर्नओवर करने वाली कम्पनी की सालाना टर्नओवर 60 करोड़ के पार हो चुकी है।

युवा योगेश की मेहनत लाई रंग

खेतों से उगलने लगा सोना

रचित सतीजा
पानीपत, हरियाणा
98123-05200

योगेश ने ग्रेजुएशन के बाद ऑर्गेनिक फार्मिंग में डिप्लोमा किया और उनकी रुचि खेती में बढ़ती चली गयी। पिता चाहते थे कि योगेश सरकारी नौकरी की तैयारी करें परन्तु उन्हें खेतों में सोना उगता दिखाई दे रहा था। अपने सपनों के पीछे दौड़ते योगेश ने खेती को एक बिजनेस मॉडल के रूप में लिया और इस बात पर पूरी रिसर्च की के उनके क्षेत्र में कौनसी उपज लगाई जाए जिससे ज्यादा मुनाफा हो और बाजार में मांग भी जिसकी ज्यादा रहती हो।

काफी खोजबीन के पश्चात निष्कर्ष निकला कि जीरे की फसल उगाई जाये। जीरे को नगदी फसल कहा जाता है और उपज भी ठीक होती है। 2 बीघा में जीरा उगाया गया और उनका पहला बिजनेस मॉडल उपज सही ना होने से फ्लॉप हो गया। जैविक खेती के विषय में उन्हें कागजी ज्ञान तो था परंतु वह समझ चुके थे के प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के बिना सही उपज कर पाना नामुमकिन था। योगेश ने एक प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक से संपर्क किया जिन्होंने उनके गाँव आकर जैविक खेती के संबंध में प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण के पश्चात तो मानो योगेश के सपनों को पंख लग गये। उन्होंने 7 किसानों के साथ एक ग्रुप बनाया और उन्हें जीरे की जैविक खेती करने के लिये प्रोत्साहित किया। 2009 में 'रैपिड ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड' नामक एक फर्म बनाई और पुन: जीरे की फसल पर दांव खेल दिया।

अब के दांव सीधा पड़ गया। फसल भी बम्पर हुई और मार्किट में दाम भी बढ़िया मिले। साथ जुड़े किसानों के भी वारे न्यारे हो गये और देखते ही देखते कई और किसान भी योगेश के ऑर्गेनिक फार्मिंग के मॉडल से जुड़ गये। योगेश का इंटरनेट के माध्यम से एक जापानी कंपनी से संपर्क हुआ। उनके प्रतिनिधि गाँव आये , खेत खलियानों में घूमे। पूरी तरह से जांच-परख के बाद कम्पनी से जीरे की सप्लाई के लिये करार किया। योगेश और उनके साथी किसान जीरा एक्पोर्ट करने लगे।

कभी 7 किसानों की उपज खरीदने वाली योगेश की कम्पनी आज 3000 किसानों के साथ जड़ चुकी है। 2009 में मात्र 10 लाख की सालाना टर्नओवर करने वाली कम्पनी की सालाना टर्नओवर 60 करोड़ के पार हो चुकी है।

योगेश की कम्पनी से जुड़ा किसानों का यह समूह जीरे के अलावा धनिया, मैथी, सुआ, कलौंजी, किनोवा, चिया सीड, गेंहू, बाजरा, मस्टर्ड सहित पश्चिमी राजस्थान में आसानी से हो सकने वाली सभी फसलों की जैविक खेती कर रहा है।

जिस दौर में घाटे का सौदा बता कर आज की युवा पीढ़ी खेती से मुँह मोड़ रही है उसी दौर में योगेश और उनकी टीम ऑर्गेनिक फार्मिंग बिजनेस में अपनी सालाना टर्नओवर को 100 करोड़ के पार ले जाने का निश्चय कर चुके हैं। कृषक की बदहाली पर लाखों कहानियों के बीच योगेश की करिश्माई सोच यह साबित कर देती है के आज के दौर में भी अगर कृषि को एक बिजनेस मॉडल के रूप में लिया जाये तो धरती सोना उगल सकती है और यह जीवन उत्सव बन सकता है। 10 साल में 10 लाख से 100 करोड़ की टर्नओवर तक पहुंचने तक के प्रयास में योगेश अपने साथ हज़ारों कृषकों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। कृषक की बदहाली को दूर करना हुक्मरानों के बस की बात नहीं है। कृषि के क्षेत्र में योगेश जैसे बिज़नेस लीडर्स की आवश्यकता है जो किसान की आय को वास्तव में दुगना कर सकें।

हर क्षण ही है उत्सव

जीवन का हर दिन
ही उत्सव है।
हर दिन ही क्या
हर क्षण ही उत्सव है।
कौन जाने
किस मोड़ पर
मृत्यु दोनों बाँहों को
फैलाए किसका
इंतजार कर रही हो?
तो क्यों ना ..
जीवन को कुछ ऐसे
जी लिया जाए,
कि विदाई से पहले
जैसे हर किसी से मिल
खुशियां मनाई जाती हैं।

यह हमारी जीवन-यात्रा जन्म से मृत्यु तक की सोलह संस्कारों में बँधी हुई है, अर्थात् हर संस्कार एक उत्सव है या यूं भी कह सकते हैं....भारत में हर दिन एक उत्सव है, क्योंकि यहाँ एक ही धर्म नहीं, कई धर्मों का समावेश है, तो स्वत: ही हम समझ सकते हैं हर दिन ही एक उत्सव है। तो क्यों न यही भाव अपने जीवन जीने के अंदाज में भी उतार लें। हर दिन एक उत्सव है।

अब देखिए ईश्वर द्वारा रचित ये प्रकृति स्वयं भी हर घड़ी उत्सव मनाती है, चाहे वो सूरज की पहली किरण हो... या फिर हिमालय से बहती नदी उमंगित, उल्लासित, आशांवित।

हिमालय से बूँद-बूँद कर बहता पानी पहले पहल कहाँ नदी कहलाता है, वो तो जहाँ से भी कोई पतला, संकरा रास्ता मिलता है बह निकलता है और यह प्रक्रिया ना जाने कितनी बार होती है। कभी-कभी नामो निशान तक मिट जाता है, तो कभी-कभी अथक प्रयास के बाद नदी का रूप धारण कर सागर से मिलने को तत्पर, निरंतर अविरल बहती रहती है और यही प्रक्रिया मानव योनि प्राप्त करने की है, न जाने कितने जन्म भिन्न-भिन्न योनियों में प्राप्त करने के पश्चात् मानव जीवन प्राप्त होता है और इसी मानव जीवन को प्राप्त करने के पश्चात् ही आत्मा का परमात्मा से मिलन है।

यह हम मनुष्य हैं जिसको ईश्वर ने विचार करने के साथ ही अपने भावों को व्यक्त करने के लिए वाणी दी है, अच्छे कर्म, परोपकार, सेवा करने के लिए मानव देह दिया है। हर इंसान ने ही धरती पर मानव शरीर धारण कर अवतार ही लिया है, अंतर है तो मात्र कर्मों का। जिसने परोपकार की राह पकड़ी, स्वयं का आनंद दूसरों की सेवा कर पाया, उसे ही ईश्वर का अवतार कहकर परिभाषित किया जाता है।

मानव शरीर ही वह शरीर है जिसके पश्चात् मानव मोक्ष की तरफ मुखरित हो सकता है, अपने कर्मों से तो ये कहना कदापि गलत नहीं कि जीवन का हर क्षण उत्सव है, आनंद है। यहीं से आत्मा का परमात्मा से वास्तविक मिलन है और जब आत्मा के परमात्मा से मिलन की बात हो तो हर क्षण आनंद है, उत्सव है। जब यह विचार आ जाए कि परमात्मा से मिलना है, तो वाणी, कर्म, समारोह सब उत्सव मनाने में लग जाते हैं अर्थात् प्रफुल्लित हो जाते हैं।

वर्तिका अग्रवाल
बनारस
agarwalvartika555@gmail.com

सकारात्मक दृष्टिकोण ही उत्सव है

गोपेश दुबे (बिस्कोहर)
सिद्धार्थ नगर
98186-88407

किसी संत ने कहा है कि मृत्यु अटल सत्य है, मृत्यु का समय अनिश्चित है। मृत्यु के आगमन की सूचना किसी प्राणी मात्र को नहीं है। मृत्यु किस क्षण किस पल होगी किसी को पता नहीं होता। अत: जीवन के प्रत्येक पल को उत्सव की तरह जियो। यह बात तो एक तरह से फांसी की सजा पाए उस अपराधी की तरह है जिसे पता है कि उसकी मृत्यु कब होगी और उससे कहा जाए कि अपने बचे हुए जीवन को उत्सव की तरह जी लो। मृत्यु के भय या दु:ख के वातावरण में जीवन को उत्सव के रूप में मनाना असंभव है।

उत्सव मनाने के लिए चाहिए खुशी प्रेम, सुख, शांति, आनंद एवं निर्भय वातावरण जो कि प्रत्येक जीवित मनुष्य के सकारात्मक दृष्टिकोण के द्वारा ही संभव है। भय और दुख के वातावरण से निकलकर खुशी सुख प्रेम के वातावरण का सृजन करना होगा। खुशनुमा जीवन के लिए प्रकृति प्रदत्त उपहारों के बारे में चिंतन एवं जीवन को सरल बनाने के लिए विज्ञान के योगदान का मनन करना होगा।

अन्न का एक दाना पृथ्वी के अन्त:स्थल में रोपितोपरान्त हजारों दानों का प्रतिफल, जीवन की तृष्णा मिटाने के लिए शुद्ध, शीतल और मृदु जल का भण्डार, जीवन की श्वसन क्रिया हेतु स्वच्छ वायु, प्रात:काल नेत्र को शांति प्रदान करने वाली सूर्योदय की लालिमा, कानो में मधुरता घोलने वाली कोयल, दादुर, मोर, पपीहा और बुलबुल जैसे पक्षियों की बोली, कौआ की कांव-कांव, मुर्गे की बांग, गौरैया का आंगन में चूं-चूं, कबूतर का गुटर-गूं, चिड़ियों का कलरव, कुत्ते के पिल्ले का कूं-कूं, गाय के बछड़ों का रम्भाना, भैंसों का जल क्रीडा करना, बत्तखों का झुंड में जल किलोल करना मछलियों का रह-रह कर पानी के ऊपर गोता लगाना, तलबुड्डी (गोताखोर) चिड़िया का घात लगाकर कलाबाजियां करते हुए पानी के अंदर तक छलांग लगाकर चोंच मे चांदी सी चमकती मछली को दबोच कर उड़ जाना, हंस, सारस, वकराज का सुंदरता में चार चांद लगाना, कमल, कुमुदनी (कोइयां) और सिंगाडा के फूलों का खिलखिलाना, जल की सतह पर पुरइन के पत्तों का बिछ जाना। गुलाब, गेंदा, चमेली, बेला, जूही, चम्पा, कनेर, और अढ्उल के रंग बिरंगे फूलों की भीनी भीनी खुशबू, चारों तरफ धान के खेतों की हरियाली, बासमती, काला नमक, धान के पौधों की मंद शीतल हवा में मिश्रित महक, लहलहाते हरे-हरे खेत, रंग-बिरंगे परिधानों में लिपटे सुंदर-सुंदर चेहरों का नूतन उत्साह एवं उमंग के साथ काम पर जाना। भाग-दौड़ भरी जिंदगी, सुंदर-सुंदर छोटी-बड़ी गाड़ियों की गड़गड़ाहट और उनके हॉर्न की टीं-चीं पीं-पों की आवाजें, उत्कृष्ट एवं आकर्षक पोशाकों में नन्हे-मुन्ने, भोले बच्चों का हंसते हुए विद्यालय जाना, घर-घर में पकवानों की खुशबू के साथ-साथ गर्म तेल की कलकलाहट की मधुर आवाज, दफ्तर की खुशनुमा शाम, सूर्यास्त का मनोरम दृश्य, वर्षा की रिमझिम ठंडी फुहार, रात की चांदनी का मनोहारी दृश्य, झींगुरों द्वारा प्रस्तुत संगीत यह सब जीवन के लिए ही तो है। मृत वस्तु का इस प्राकृतिक उपहारों से क्या वास्ता। मृत व्यक्ति के लिए यह सब आनंद का विषय हो ही नहीं सकता।

जीवन को सरल से सरलतम बनाने के लिए विज्ञान के महान विद्वानों, और आविष्कारकों ने अथक प्रयास किए हैं और सतत् प्रयासरत भी हैं। तकनीकी आविष्कारों ने तो जीवन को आसान बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। मनुष्यों के बीच की दूरी को कितना कम कर दिया है तकनीक ने। कम्प्यूटर से लेकर मोबाइल तक सब कुछ मानव जीवन में आश्चर्य ही तो है। यातायात के संसाधनों ने तो और भी जीवन को आसान बना दिया है।

कहा जाता है की लंकाधिपति रावण ने वायु, अग्नि और वरुण आदि शक्तियों

को अपने वश में कर लिया था। परन्तु रावण इन्हें विश्व कल्याण हेतु प्रायोजित न करके अपने निजी स्वार्थ के लिए प्रयोग करता रहा। जिसका परिणाम नकारात्मक रहा जो कि किसी से छुपा नहीं है।

आज विज्ञान के बल पर मानव भी वायु, अग्नि और जल आदि पर विजय प्राप्त कर चुका है। जरा सी गर्मी लगी, बटन दबाकर पंखा, कूलर, एसी चालू करके हवा को वश में करना, एक छोटी सी माचिस की डिब्बी या लाइटर में आग को वश में करना, मानव का अपने स्नान घर या तरणताल में वातानुकूलित जल से स्नान करना या फव्वारे से स्नान वर्षा जल से स्नान करने का एहसास दिलाना, मानव का चिड़ियों के समान आसमान में उड़ना, चंद्रमा पर मानव का पैर रखना और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों पर मानव जीवन को या मानव जीवन की संभावनाओं की खोज करना या जीवन के अनुकूल वातावरण की खोज करने का सतत प्रयास जारी रखना है ।

तात्पर्य यह है कि 'जीवन एक अटल सत्य है' इस दृष्टिकोण को हर मानव में विकसित करना होगा। दुनिया जब तक रहेगी, चांद और सूरज जब तक रहेंगे, प्रकृति का संतुलन जब तक रहेगा पृथ्वी पर जीवन सतत रूप से विकसित होता रहेगा। परन्तु शास्त्रों में कहा गया है कि 'अति सर्वत्र वर्जयते' अत: हर मानव को प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण और संतुलन के बारे मे गहन ज्ञान देकर हम जीवन को चिरकाल तक सुखमय बना सकते हैं। इसके लिए हमे हर मानव जीवन मे आध्यात्मिक क्षमता का विकास करके 'जीवन एक शाश्वत सत्य है' के सिद्धांत के ज्ञान द्वारा उनमे सकारात्मक दृष्टिकोण का सूत्र पात करके जीवन के हर पल हर क्षण को, सुख, शांति, आनंद पूर्वक और निर्भय वातावरण का निर्माण करके उत्सव के रूप में मनाया जा सकता है।

नवरात्रि

पूरे शहर में दो दिन से उत्सव का माहौल था। सभी लोग नवरात्र की तैयारी में जुटे हुए थे। घरों के साथ साथ मित्रमण्डलियों में भी विचार विमर्श चल रहा था-अब पूरे नौ दिन न कोई शराब के हाथ लगाएगा न कोई मांस खायेगा। वो तथाकथित पर्यावरणविद जो अपने मांसभक्षण के पीछे ये परोपकारी तर्क देते थे कि हम तो मांस इस जीव-जगत के संतुलन के लिए खा रहे है, इससे जीव विशेष की संख्या नियंत्रित रहेगी-वो भी पर्यावरण को ताक पर रखकर नौ दिन के लिए मांस का त्याग करने का निर्णय ले चुके थे। वो तो भला हो दुर्गा माँ का जो नौ दिन के अलावा पूरे साल अवकाश पर रहती हैं नहीं तो प्रकृति का बेड़ा गर्क हो चुका होता। पूरे मोहल्ले में चर्चा हो रही है-आजकल कन्या माता के लिए बहुत मारामारी हो गयी है। नवरात्र के दिनों में व्रत की सिद्धि के लिए कन्याओं को भोजन कराना अनिवार्य होता है। सब लोग व्रत कर रहे है, पुण्य कमाने के लिए ये बहुत जरूरी है कि कन्या आकर भोजन करे, चाहे वो रोटी का एक-दो ग्रास ही ले, चाहे एक चम्मच खीर ही खाये पर खाना जरूरी है। कन्याएं भी नौ दिन व्यस्त रहती है-हर घर में जाकर भोग लेना पड़ता है। कन्याएँ कम पड़ जाती है, घरों में काम करने वाली बाइयों की बेटियों को बुलाना पड़ता है। प्रेम से आदर-सत्कार के साथ भोजन करवाकर श्रद्धानुसार भेंट भी दी जाती है। कई लोग तो कन्याओं की पूजा भी करते हैं-माहौल देखकर लगता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' ठीक ही तो कहा गया है-ये बात पूरे साल नहीं समझ मे आती नवरात्र में आ जाती है। इधर एक बड़े घर में काम करने वाली बाई की दो बेटियां भी आज आमंत्रित की गई थी। नवरात्र समाप्ति के अगले ही दिन बाई ने अपनी दस साल की बेटी को घरों में बर्तन मांजने भेज दिया और छह साल की बेटी को भी कचरा बीनने के लिए जाने का आदेश हुआ। बच्ची ने बड़ी मासूमियत से अपनी माँ से कहा-माँ मैं तो देवी का रूप हूँ, देवी को भला कौन गंदगी में भेजता है? बच्ची की माँ ने भी बात काटते हुए कहा-नवरात्र की बात कुछ और थी अब तो कचरा लाना ही पड़ेगा। बच्ची हार चुकी थी वो उठी और गंदगी में हाथ डालने चली गयी-देवी के रूप से बाहर निकलकर चीथडों में लपटी कच्ची बस्ती की लड़की की तरह। लेकिन उसके दिमाग मे एक अनुत्तरित प्रश्न बार बार कौंध रहा था -क्या लड़कियां सिर्फ नवरात्र में ही माता का रूप होती है?

अभिषेक यादव
राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी
96265-10723

प्रेमचन्द की कहानी रामलीला

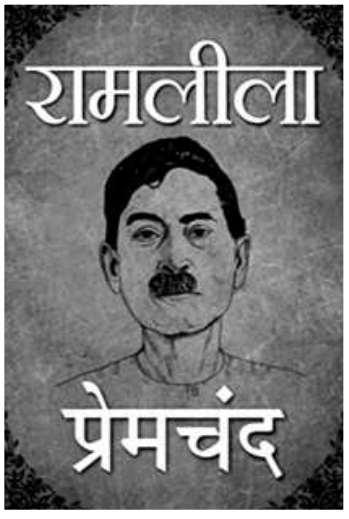

डॉ. महेश चन्द
शालीमार बाग,
नई दिल्ली
99506-01366

प्रेमचन्द की कहानी रामलीला में भक्त को रामलीला करने वाले पात्रों की पूर्ण श्रद्धा तथा प्रेम भावना से सेवा करता दिखाया गया है। यही रामलीला उत्सव की प्रेरणा, उल्लास और उसकी महानता है। जिसका पालन आज भी भक्त हृदय से करते चले आ रहे हैं।

रामलीला को एक उत्सव की तरह मनाया जाता है। यह उत्सव दशहरा पर्व के साथ सम्पन्न होता है। रामलीला उत्सव समाज में आज भी अत्यधिक लोकप्रिय है। प्रेमचन्द इस उत्सव की लोकप्रियता के बारे में लिखते हैं कि नगर और देहात की रामलीला एक जैसी लगती है। जिसे आज भी लाखों लोग देखकर आनंदित होते हैं। इस उत्सव के आनन्द को प्राणी जगत के खेल कूद भी नहीं रोक पाते। इसमें भक्त का भगवान के प्रति अत्यधिक लगाव दिखाया गया है।

'इधर एक मुद्दत से रामलीला देखने नहीं गया। बंदरों के भद्दे चेहरे लगाये, आधी टांगों का पाजामा और काले रंग का ऊंचा कुर्ता पहने आदमियों को दौड़ते हू-हू करते देखकर अब हंसी आती है, मजा नहीं आता। काशी की लीला जगविख्यात है। सुना है लोग दूर-दूर से देखने आते हैं। मैं भी बड़े शौक से गया, पर मुझे तो वहां की लीला और किसी बज्र देहात की लीला में कोई अंतर न दिखाई दिया। हां रामनगर की लीला में कुछ साज-सामान अच्छे हैं। राक्षसों और बंदरों के चेहरे पीतल के हैं, गदाएं भी पीतल की हैं, कदाचित भ्राताओं के मुकुट सच्चे काम के हों, लेकिन साज-सामान के सिवा वहां भी वही हू-हू के सिवा और कुछ नहीं। फिर भी लाखों आदमियों की भीड़ लगी रहती। एक जमाना था, जब मुझे भी रामलीला में आनंद आता था। आनंद तो बहुत हल्का सा शब्द है। वह आनंद उन्माद से कम न था। संयोगवश उन दिनों मेरे घर से बहुत थोड़ी दूर पर रामलीला का मैदान था और जिस घर में लीला पात्रों का रूप रंग भरा जाता था। दो बजे दिन से पात्रों की सजावट होने लगती थी। मैं दोपहर ही से वहां जा बैठता और उत्साह से दौड़-दौड़ कर छोटे-मोटे काम करता। एक कोठरी में राजकुमारी का शृंगार होता था। रंग की प्यालियों में पानी लाना, रामरज पीसना, पंखा झलना मेरा काम था। जब इन तैयारियों के बाद विमान निकलता तो उस पर रामचन्द्रजी के पीछे बैठ कर मुझे उल्लास, रोमांच होता था।'1

'निषाद नौका लीला का दिन था। मैं दो चार लड़के के बहकाने में आकर गुल्ली डंडा खेलने लगा था। आज शृंगार देखने न गया। विमान भी निकला पर मैंने खेलना न छोड़ा।' 2

इसका आशय यह है कि भक्त का ध्यान भगवान की ओर हटकर खेल की ओर लग गया। इससे भगवान रुष्ट हो गये। जिसके कारण भक्त को पीड़ा हुई। भक्त फिर भगवान के चरणों की ओर दौड़ पड़ा।

कत्थक के शब्दों में-' मैं सीधे नाले की तरफ दौड़ा। विमान जल-तट पर पहुंच चुका था। मैंने दूर से देखा मल्लाह किश्ती लिए आ रहा है। दौड़ा लेकिन आदमियों की भीड़ में दौड़ना कठिन था। आखिर जब मैं भीड़ हटाता, प्राण-प्रण से आगे बढ़ता घाट पर पहुंचा तो निषाद अपनी नौका खोल चुका था। रामचन्द्र पर मेरी कितनी श्रद्धा थी। अपने पाठ की चिंता न करके उन्हें पढ़ा दिया करता था। लेकिन वही रामचन्द्र नौका पर बैठे इस तरह मुंह फेरे चले जाते थे, मानो मुझसे जान पहचान ही नहीं। नकल में भी असल की कुछ न कुछ बू आ ही जाती है। भक्तों पर जिनकी निगाह सदा ही तीखी रही है, वह मुझे क्यो उबारत।' 3

इस कथन से स्पष्ट है कि भगवान भक्त को उसकी भूल के लिए तुरन्त दण्ड देते हैं जिससे वह अपनी भूल को समझ जाय और फिर कभी उस त्रुटि को

न दोहराये। भक्त को जब अपनी भूल का अनुभव हुआ तब वह भगवान से मिलने के लिए छटपटाने लगा। उसी के शब्दों में-'मैं विकल होकर उस बछड़े की भांति कूदने लगा, जिसकी गरदन पर पहली बार जुआ रखा गया हो। कभी लपक कर नाले की ओर जाता, कभी किसी सहायक की खोज में पीछे की तरफ दौड़ता, पर सब के सब अपनी धुन में मस्त थे, मेरी चीख पुकार किसी के कानों तक न पहुंची। तब से बड़ी बड़ी विपत्तियां झेलीं। मैंने निश्चय किया था कि अब रामचंद्र से कभी नहीं बोलूंगा। न कभी खाने की कोई चीज ही दूंगा। लेकिन ज्यों ही वो नाले को पार कर पुल की ओर लौटे मैं दौड़कर विमान पर चढ़ गया और ऐसा खुश हुआ, मानो कोई बात ही न हुई थी।'

कबीर ने इस व्यथा को इन शब्दों में कहा है-

' जिनि थैं गोबिन्द बीछुरे, तिनके कौन हवाल'4

जब भक्त को भगवान फिर से मिल गये तो उसका हृदय अलौकिक आनन्द से भर गया।

'रामलीला समाप्त हो गयी थी। राजगद्दी होने वाली थी, पर न जाने क्यों देर हो रही थी। लेकिन मेरी श्रद्धा अभी तक ज्यों की त्यों थी। मेरी दृष्टि में अब भी रामचंद्र ही थे। घर पर मुझे खाने को कोई चीज मिलती, वह लेकर रामचंद्र को दे आता। उन्हें खिलाने में मुझे जितना आनन्द मिलता था, उतना आप खा जाने में कभी न मिलता। कोई मिठाई या फल पाते ही मैं बेतहाशा चोपाल की ओर दौड़ता। अगर रामचंद्र वहां न मिलते तो उन्हें चारों ओर तलाश करता और जब तक वह चीज उन्हें न खिला देता, मुझे चैन न आता था।'5

'प्रात: काल रामचन्द्र की विदाई होने वाली थी। मैं चारपाई से उठते ही आंखें मलता हुआ चैपाल की ओर भागा डर रहा था कि कहीं रामचन्द्र चले न गये हों। पहुंचा तो देखा बीसों आदमी हसरत नाक मुंह बनाये उन्हें घेरे खड़े हैं। मैंने उनकी ओर आंख तक न उठायी। सीधा रामचन्द्र के पास पहुंचा। मेरे सिवा वहां और कोई न था। मैंने कुंठित स्वर से रामचन्द्र से पूछा-क्या तुम्हारी विदाई हो गयी। रामचन्द्र - हां हो गयी। 'केवल मैं ही उनके साथ कस्बे के बाहर तक पहुंचाने आया।' उन्हें विदा करके लौटा, तो मेरी आंखें सजल थीं, पर हृदय आनन्द से उमड़ा हुआ था।'6

प्रेमचन्द की कहानी रामलीला में भक्त को रामलीला करने वाले पात्रों की पूर्ण श्रद्धा तथा प्रेम भावना से सेवा करता दिखाया गया है। यही रामलीला उत्सव की प्रेरणा,उल्लास और उसकी महानता है। जिसका पालन आज भी भक्त हृदय से करते चले आ रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ -

1. मानसरोवर (भाग-5) टि. 1, 2, 3, 5, 6 पृ. 34, 35, 36, 39.
2. कबीर ग्रंथावली , टि.4-पृ. 6

जीवन एक उत्सव

क्या कभी आपने सुना है कि अँधेरे ने सुबह न होने दी। सुख-दु:ख, विजय-पराजय और स्वीकृति-अस्वीकृति जीवन की रीत है। अक्सर हम सुख की अभिलाषा में दु:ख से भयभीत होते रहते हैं। मगर सच्चाई तो यह है कि दु:ख की भट्टी में तपकर ही हमें स्वर्ण रूपी सुख प्राप्त होता है। दोस्तों, जीवन

में कभी घोर निराशा और उदासीनता को अपने पास भी फटकने मत दीजिए। उमंग और उत्साह का दीप सदैव अपने भीतर प्रज्ज्वलित रखिए। केवल किसी पर्व या त्योहार पर प्रसन्नता व उत्साह का प्रदर्शन करना ठीक नहीं है, जीवन के हर क्षण को एक उत्सव की भाँति मनाइए। जीवन में कभी भी अपने आप को टूटने या बिखरने मत देना क्योंकि लोग गिरे हुए मकान की ईंट तक ले जाते है। आज मनुष्य चाँद पर जीवन खोजने के प्रयत्न में लगा है, मगर वह जीवन में खुशियाँ ढूँढ़ने का जतन नहीं करता। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, बस अपने मार्ग पर डटे रहिए। जीवन से भागिए मत, बल्कि उसमें भाग लीजिए। जीवन में जोखिम लेना सीखें, भयभीत न हों। अगर आप दूध फटने से डरेंगे तो, पनीर कहाँ से मिलेगा? इसलिए दृढ़निश्चय तथा अच्छे विचारों के साथ आगे बढ़िए। फिर देखिए, सफलता कैसे आपके कदम चूमती है। मगर याद रखिए सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद विनम्रता को मत भूलिए। क्योंकि सफलता एक सुंदर पुष्प है, तो विनम्रता उसकी सुगंध! कभी भी अहं को मत पालिए क्योंकि किसी ने क्या खूब कहा है-''समय बहाकर ले जाता है, नाम और निशान, कोई 'हम' में रह जाता है, कोई 'अहम' में रह जाता है। इतना छोटा कद रखिए कि सभी आपके साथ बैठ सकें और इतना बड़ा मन रखिए कि जब आप खड़े हो जाएं तो कोई भी बैठा न रह सकें।

गिरधारी विजय
आगरा रोड, जयपुर
98296-58914

ज़िंदगी उत्सव है इसे जीना सीखें

शिवकुमार 'अवार' फौजदार
एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय
कॉर्पोरेट कंसलटेंट, प्रेरक प्रवक्ता, सफल कॉर्पोरेट लॉयर मो. 8290123456

जो कह दिया, वह 'शब्द' थे
जो नहीं कह सके वह 'अनुभूति' थी
और जो कहना है फिर भी
नहीं कह सकते, वह 'मर्यादा' है।।

वहीं ज़िदगी है, वही जिन्दादिली है और वही 'ज़िदगी का उत्सव है'

ज़िंदगी वाकई में बेहद खूबसूरत नगमा है, एक जश्न है, एक उल्लास है, एक उत्सव है, एक शहनाई है, एक आत्मा का समागम है।

एक कहानी सुनाता हूं- एक गांव में एक विधवा रहती थी, बहुत ही शांत,सरल और सहज, सभी का ख्याल रखती और ईश्वर में आस्था रखती, लेकिन विड़बना यह थी कि वो सुबह जिस भी महिला पुरुष के सामने दिख जाए तो उसे पूरे दिन खाना नसीब न हो।

ये बात दिनों दिन फैलती गई और विधवा का मुंह देखकर या मनहूस चेहरा देखकर कोई भी अपना दिन भूखे पेट नहीं निकालना चाहता था। यह खबर धीरे-धीरे फैलकर राजा के पास पहुंची। राजा ने कहा यह कैसे संभव है कि प्रात: उस विधवा का मुंह देखकर दिन भर खाना नसीब न हो। राजा ने उस महिला को राजमहल बुलाया और रात्रिकालीन विश्राम करवाया। सुबह जागते ही सबसे पहले राजा ने उस महिला का मुंह देखा और उससे मुखातिब हुए। इसके बाद दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर खाना खाने बैठे तो उनके भोजन को बिल्ली ने झूंठा कर दिया, खाना दोबारा तैयार किया गया और खाने बैठे तो खबर मिली कि राजकुमार का पैर फिसल गया, काफी चोट आई है, राजा राजकुमार का इलाज कराने में व्यस्त हो गए। राजा अब भूख के मारे तिलमिलाने लगे और तीसरी बार खाना खाने बैठे और ज्यों ही निवाला मुंह तक आया तो दरबार भागा भागा आया और बोला महाराज की जय हो, पडौसी राज्य की सेना हमारी ओर आ रही है, उन्होंने हम पर आक्रमण कर दिया है, राजा सेनापति को युद्ध का आदेश देकर रणभूमि की ओर निकल गए। राजा विजयी हुए, राजदरबार लगा और राजा ने सबसे पहले उस महिला को बुलाया तुम मनहूस हो जो भी तुम्हारा चेहरा प्रात: देख ले उसे खाना नसीब न हो, यह मेरे साथ भी हुआ है, ऐसे में क्यों न तुम्हें मृत्यु दंड दिया जाए। क्योंकि फिर कोई भी तुम्हारा मुंह नहीं देखेगा और उसे खाना तो नसीब होगा। ऐसे में आपको दो दिन की मोहलत दी जाती है कि तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है? महिला को दो दिन बाद फांसी के तख्ते पर ले जाया गया और फांसी का फंदा तैयार किया गया। राजा के सामने जब उससे अंतिम इच्छा के बारे में पूछा तो महिला ने कहा कि मुझे वकील साहब से मिलना है, फिर आपसे अंतिम इच्छा बताऊंगी। वकील साहब ने महिला के कान में कुछ कहा, इसके बाद महिला ने राजा से कहा- महाराज आपने उस दिन सबसे पहले मेरा मुंह देखा, आपको खाना नसीब नहीं हुआ और मैंने भी महाराज का मुंह देखा तो मुझे मृत्युदंड मिला। अब आप महाराज हैं, न्याय के देवता, जनता को समझाएं कि अभागा कौन है, जिसका मुंह देखने से खाना नहीं मिले या मुंह देखने से मृत्युदंड मिले। जिंदगी एक उत्सव है, इसे जीना सीखें।

तस्वीर बोल उठी-19

तस्वीर : राजेश कुमार सोनी

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 अक्टूबर) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर बोल उठी-18

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021 (राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-18 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

किताबों का बचपन में संग मिले,
कौतुहल को ज्ञान के पंख मिले।
सपनों के सुंदर द्वार खुले...
जीवन में शिक्षित भाव चले।

चन्द्रिका गोस्वामी
जयपुर (राज.)

संगीतमयी महफ़िल
लम्हे ने मोह लिया मन

इंडियन आईडल एकेडमी, जयपुर और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की ओर से महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में गीत और गज़लों से सजी एक बेहतरीन शाम 'लम्हे-3' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुंबई के गायक श्रेयस पुराणिक, राजू दास व जयपुर की अंबिका मिश्रा व दीपक माथुर ने प्रस्तुति दी। राजू दास गुलाम अली साहब के शिष्य रहे हैं और उनकी गिनती बॉलीवुड के नंबर वन वर्सेटाइल स्टेज सिंगर्स में की जाती है। इस अवसर पर शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए संगीत गुरु पं. कुंदनमल शर्मा को अकादमी की ओर से लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

से नवाजा गया। कार्यक्रम में विशेष मेहमान के रूप में मेडिकल एजुकेशन आयुक्त वीरेन्द्र सिंह, आर्युवेद संस्थान के निदेशक डॉ. संजीव शर्मा, दिल्ली से आए कवि नरेश शांडिल्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान कवि नरेश शांडिल्य द्वारा लिखित और राजू दास और अंबिका मिश्रा द्वारा गाए गीत 'माहिया' की लांचिग भी की गई।

शहीद के माता-पिता को राज्यपाल ने किया तैल चित्र भेंट

शहीद जितेन्द्र सिंह का तैल चित्र, चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता ने तैयार किया था जिसे राजभवन जयपुर में शहीद के माता-पिता को भेंट किया गया।

आस्ट्रेलिया में हिंदी की बह रही बयार

डॉ. भावना कंवर को 'हिंदी रत्न सम्मान' से नवाजा गया

सिडनी (आस्ट्रेलिया) में हाल ही मुशायरा एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मोहम्मद इकबाल चौधरी थे। संचालन का भार अपर्णा वत्स एवं ज्योत्सना ज्योति ने सँभाला था। जिसे फिल्म प्रोड्यूसर शमीम खान,(एम एस के इवेन्टस) ने आयोजित किया। यह प्रोग्राम 2017 से हर वर्ष किया जा रहा है जिसमें स्थानीय कवि और भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कवियों को आमंत्रित किया जाता है। इस वर्ष भारत से आमंत्रित प्रसिद्ध शायर नदीम शाद जी को श्रोताओं ने बहुत ही सराहा। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में सम्मिलित कवि एवं शायरों में नफस अम्बालवी, विजय कुमार सिंह डॉ0भावना कुँअर, प्रगीत कुँअर, रूपेन्द्र सोज़, मोहम्मद जफ़र खान, फरीदा लखनवी,जफ़र सिद्दकी, संजय अग्निहोत्री, मंजु मित्तल,कैनबरा से यासमीन सोलोमन, ब्रिसबेन से सोम नैय्यर सोम, नीतू सिंह ने सहभागिता की।

एमएसके इवेंट के आयोजकों ने साहित्य क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए जिनको सम्मानित किया उनमें डॉ. भावना कुँअर को 'हिन्दी रत्न सम्मान' माला मेहता द्वारा प्रदान किया गया।

रिपोर्ट- राजकुमार जैन 'राजन'

जो पसंद है वही करें तो मिलेगी सफलता

रमेश चन्द्र गुप्ता

रोहित कृष्ण नंदन

***जीवन** एक उत्सव है और इस जिंदगी का उत्सव हमें हर दिन मनाना चाहिए। ऐसी ही एक शख्सियत हैं रमेश चंद्र गुप्ता जो कि वर्ष 2013 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के सलेक्शन स्केल से सेवानिवृत्त हुए और वर्तमान में समाज को न केवल जागरूक कर रहे हैं बल्कि एक सजग सामाजिक मनुष्य होने का दायित्व भी कुशलता से निभा रहे हैं। माही संदेश के लिए सहयोगी साथी अरविंद शर्मा के साथ लिया गया यह साक्षात्कार।*

जब बढ़े कदम

जयपुर जिले के देहलाला गांव में जन्मे रमेश चन्द्र गुप्ता की प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गांव में ही हुई। इसके बाद 11 वीं कक्षा की पढ़ाई के लिए जयपुर शहर में आ गए। बचपन के दिनों को याद करते हुए रमेश गुप्ता कहते हैं कि कोर्स की किताबों के अलावा लोक कथाएं, कहानियाँ व साहित्य पढना उन्हें बहुत रुचिकर लगता था। उनका आज भी यह सफर जारी है। गुप्ता का कहना है कि दसवीं कक्षा में हालांकि उनका प्रतिशत 55 भले ही रहा लेकिन इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर न देखा। उनका अंक प्रतिशत लगातार बढ़ा फिर चाहे कोई सी भी परीक्षा रही हो।

70 प्रतिशत से अधिक अंकों से सांख्यिकी विषय में एम.एस.सी. के बाद गुप्ता ने अपना रुख पी.एच.डी की ओर किया। उन्हें यू.जी.सी. से जूनियर फेलोशिप भी स्वीकृत हुई लेकिन कहते हैं न कि किस्मत आपको बेहतर जगह स्वयं ही ले जाती है बशर्ते आप जीवन में अपना कदम ईमानदारी से बढ़ाते हों। परिस्थिति वश रमेश चन्द्र गुप्ता पी.एच.डी बीच में छोड़कर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में आ जुटे और पहली सफलता टैक्स इंस्पेक्टर के रूप में चयनित होकर प्राप्त की। आर.ए.एस. के दूसरे प्रयास में फिर सफल होकर तहसीलदार के रूप में 03 मार्च 1980 को नियुक्त हुए और वर्ष 2013 तक अपनी सराहनीय सेवाएं दीं।

सरकारी सेवा हमेशा रहेगी याद

रमेश गुप्ता कहते हैं कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा के जरिए उन्हें जिंदगी को जिन्दादिली से जीने का अवसर मिला। सरकारी सेवा के दौरान एसडीएम व अन्य पदों पर उनकी नियुक्ति भरतपुर, कोटा, धौलपुर, झालावाड़ सीकर,

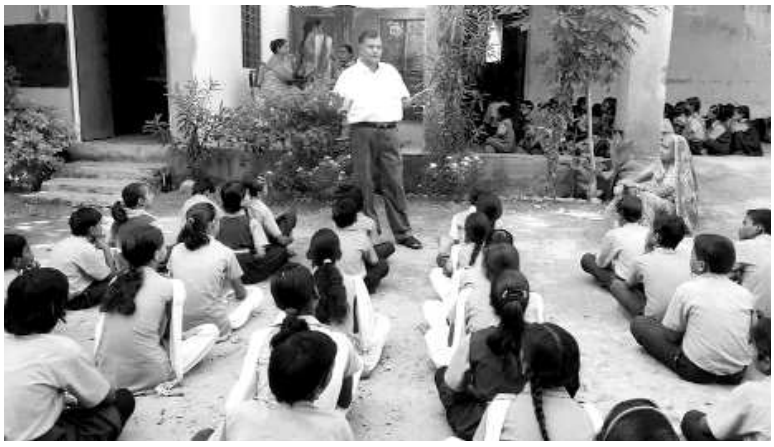

चित्तौडग़ढ़, प्रतापगढ़, जयपुर रही। रमेश गुप्ता का मानना है कि इस प्रशासनिक सेवा के माध्यम से समाज से जुडऩे का, शोषित पीड़ित की सेवा और जन हित के काम करने का जो मौका उन्हें मिला शायद इससे बेहतर मौका दूसरी किसी सेवा से न मिल पाता। रमेश प्रशासनिक सेवा के माध्यम से समाज सेवा कर अपने आपको गौरवान्वित व संतुष्ट महसूस करते हैं। गुप्ता का कहना है कि 'मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि पुर्नजन्म होने पर प्रशासनिक सेवा में फिर से मेरा चयन हो और सेवा का सुअवसर प्राप्त हो'।

जीवन को उत्सव मानते हैं रमेश गुप्ता

रमेश गुप्ता कहते हैं कि हम जीवन को सही मायनों में जीना बहुत ही देर से सीख पाते हैं। अक्सर हम जीवन को समझते ही नहीं हैं और फिजूल की भागादौड़ी में इस अनमोल जीवन के पलों को व्यर्थ करते रहते हैं। लेखक रॉबिन शर्मा लिखते हैं कि 'काश जवानी समझ पाती, काश बुढ़ापा कर पाता' बड़ी गहरी बात है यह 'अगर समय पर जीवन के महत्व को समझ जाएं तो इससे बेहतर तो कुछ हो ही नहीं सकता। सही मायने में देखा जाये तो हम ही हमारे शत्रु और हम ही हमारे मित्र हैं। दुख सुख का कारण कहीं बाहर नहीं हमारे अंदर ही है। हमारे जीवन के लिए कोई और नहीं बल्कि मुख्यत: हम ही जिम्मेदार हैं। गुप्ता का कहना है कि, 'जिएं इस तरह कि आपके भीतर कुछ भी अनखिला न रह जाए' अच्छी पुस्तकों अच्छे साहित्य को जीवन में बहुत महत्वपूर्ण मानते है गुप्ता। आज भी देशी विदेशी लेखकों द्वारा लिखित लगभग 100 पुस्तकों का संग्रह है गुप्ता की अपनी निजी लाइब्रेरी में। मुंशी प्रेम चंद लिखित कहानी, 'नमक का दारोगा' को एक बार नहीं सौ बार पढ़ने की सीख देते हैं गुप्ता और ऐसा वे सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन व निजी जीवन में शांति के लिए जरूरी मानते हैं। आजकल श्री भगवदगीता को बारीकी से समझने में लगे हैं गुप्ता ताकि इसे सहज व सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाने में अपना योगदान दे सकें तथा ये अच्छी सलेक्टेड मूवी को भी देखना नहीं भूलते। निराशा को दूर भगाने और आनंद की अनुभूति के लिए संगीत का जीवन में अहम् रोल मानते हैं गुप्ता।

समाज सेवा में रमता है मन

रमेश चन्द्र गुप्ता कहते हैं कि जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज को विकसित और संस्कारित करने का दायित्व हमारा है। रमेश चंद पौधारोपण में विशेष सक्रिय हैं, प्रकृति प्रेमी होने के कारण हर वर्ष पौधे लगाने के साथ - साथ सैकडों पौधे वितरण भी करते हैं। इसके अलावा ब्लड डोनेशन केम्पस आयोजन में सहभागी बन रक्तदान के लिए भी विशेष रूप से अलख जगाते हैं। छोटे बच्चों को संस्कारित करने के लिए बाल पत्रिकाओं का भी वितरण ये विद्यालयों में करते रहते हैं, छात्रों को सफलता व जीवन की बेहतरी के लिए नि:शुल्क मोटिवेशनल लेक्चर भी देते हैं। गुप्ता का मानना है कि यदि व्यक्ति इस एक बात को समझ जाए कि, 'वे सब एक ही अस्तित्व से हैं' तो कई समस्याओं का निराकरण संभव है। मनुष्य-जीवन की सार्थकता इसी में हैं कि वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ साथ दूसरों की उन्नति के लिए भी जीवन भर प्रयास करता रहे। अपने बचपन में रही अंग्रेजी की कमजोरी पर अफसोस जताते हुए गुप्ता कहते हैं कि आधुनिक समय में अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है लेकिन साथ ही कहते हैं कि सीखने की कोई उम्र नहीं। ....**शेष पृष्ठ 22 पर**

विज्ञानहत मानव

गंगा 'अनु'
पश्चिम बंगाल
98744-74446

एक ओर देश में दुर्गापूजा व दीपावली पर्व को लेकर तैयारियां चरमोत्कर्ष पर है, शॉपिंग मॉल्स, दुकानों, बाजारों में खरीददारों की भीड़ है। दुर्गापूजा विशेषकर भारत की बड़ी पूजा में से एक है, लेकिन इसके पहले ही कोलकाता में आई आपदाएं लोगों को शोकाहत कर चुकी है। फिर भी आमजन को सरकार से अच्छे दिन की उम्मीद है। दुर्गापूजा के पहले कोलकाता स्थित बोऊबाजार इलाके में मैट्रो की खुदाई के कारण घरों के धंसान से ग्रसित परिवारों की दास्तां बड़ी चिंताजनक है। हालांकि इसमें किसी सरकार का दोष नहीं क्योंकि जनता ने ही अपनी सुविधा हेतु मैट्रो बनाने की मांग की थी।किसी शायर ने कहा है कि समझौता गमों से कर लो
जिन्दगी में गम भी मिलते हैं
पतझड़ आते ही रहते हैं
कि मधुबन फिर भी खिलते हैं

या यूं कहें कि आजादी पाने के लिए कुर्बानियां देनी पड़ती हैं। इसलिए मेट्रो के लिए कोलकाता के लोगों ने कुर्बानी दी है। बोऊबाजार के जिस इलाके में फिलहाल जमीन के नीचे ईस्ट वेस्ट मेट्रो का सुरंग खोदने का काम चल रहा है वहां कमोबेश 230 पुरानी इमारतें हैं जिसके निचले हिस्से में बनी दुकानों में सोने चांदी के आभूषण बनाने का कारोबार होता है। यहां की गलियां काफी संकरी हैं और यहां सोने का कच्चा माल लेनदेन के काम में भी सैकड़ों लोग जुड़े हैं। दुर्घटना के बाद उन सभी इमारतों से भी लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। करोड़ों रुपये के आभूषण इमारतों के अंदर फंसे पड़े हैं। हालांकि उच्च न्यायालय के निर्देश पर पुलिस और आपदा प्रबंधन टीम की सुरक्षा में इन दुकानों में लोग चार सितंबर सुबह से शाम तक सामानों को निकाल लिया गया। अंदाजा लगाया जा रहा था कि 2022 के मध्य में ईस्ट वेस्ट

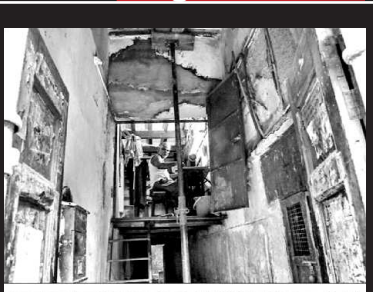

मेट्रो का काम पूरा हो जाएगा। जुड़वा शहरों- हावड़ा कोलकाता और सॉल्टलेक को जोड़ने के लिए 16.6 किलोमीटर लंबी ईस्ट वेस्ट मेट्रो का काम लंबे समय से चल रहा है। इस मेट्रो का भू-गर्भ पथ 10 किलोमीटर का है। वैसे इस दुर्घटना के बाद कलकत्ता उच्च न्यायालय ने ईस्ट वेस्ट मेट्रो के कार्य पर स्थगन लगा दिया है। केएमआरसीएल के अनुसार इस दुर्घटना के बाद से ईस्ट वेस्ट मेट्रो का काम रोक दिया गया था और जब तक विशेषज्ञों की पूरी रिपोर्ट नहीं आ जाती तब तक काम शुरू नहीं किया जाएगा।

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

नवीन कानूनगो 'कानून'
जयपुर

जीवन का रूप

जीवन है एक महोत्सव, पल-पल बदले रूप।
सुबह, दुपहरी,शाम,ज्यों, दिनकर बदले धूप।।

खेले मन अठखेलियाँ, रोता, हँसता, मूक।
जीवन के अभिराम में, भरे तान बन कूक।।

जीवन का हर्ष

उम्र भर हर्ष की चहक हो, कर हृदय से वंदना
प्रेम की तरण पर 'ओहो, भाव भरती व्यंजना।।

खेलता है मन बन लहर, दिव की मोद-गोद में
लोटकर उलट-पुलट बहे, गेय गान विनोद में।।

जन संदेश...

जनता कैसे मनाए जीवन का उत्सव

संपूर्ण राजस्थान राज्य में ब्लॉक सामाजिक सुरक्षा अधिकारी कार्यालयों में न कर्मचारी और न ही संसाधन

दीपक कृष्ण नंदन

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के ब्लॉक स्तर पर स्थापित सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों ने हाल ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को ज्ञापन देकर अपनी समस्याओं से अवगत कराया है। मुख्यमंत्री को दिए गए ज्ञापन के अनुसार दो वर्ष पश्चात भी एसएसओ ऑफिसों का क्रियान्वयन भली भांति से संचालित नहीं हो पा रहा। अधिकांश दफ्तर हॉस्टल्स में चल रहे हैं ज्यादातर एक ही कमरे में दफ्तर संचालित हो रहा है। दफ्तरों में कम्प्यूटर, प्रिंटर, टेलीफोन, आदि आवश्यक सुविधाओं का अभाव है। सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के अलावा दफ्तरों में अन्य कर्मचारी भी नहीं हैं। रिटायर्ड कर्मचारी लगाने की मंजूरी भी हाल ही 31 अगस्त 2019 को खत्म हो गई। दफ्तर में केवल एक एसएसओ अधिकारी रहने के कारण आवश्यक कार्यों का निपटारा नहीं हो पा रहा। एसएसओ अधिकारी के साथ साथ जनता भी परेशान है। सरकार द्वारा जल्द से जल्द एसएसओ दफ्तर में आवश्यक सुविधाओं के साथ साथ कर्मचारियों की नियुक्ति करना ही एक मात्र उपाय है ताकि जनता को अनावश्यक रूप से परेशान नहीं होना पड़े।

गौरतलब है कि सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों को विभाग की मात्र 06

योजनाएं (पालनहार, सहयोग एवं उपहार, सुखद दांपत्य योजना, मुख्यमंत्री नि:शक्तजन स्व-रोजगार ऋण योजना, गाड़िया-लोहार भवन निर्माण योजना, गाड़िया-लोहार कच्चा माल क्रय योजना) ही हस्तांतरित की गई हैं, व सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों के पदस्थापन के बाद पालनहार योजना के लाभार्थियों की संख्या लगभग पचास प्रतिशत बढ़ गई है। जबकि पद बनाने का उद्देश्य था कि विभाग की समस्त योजनाएं हस्तांतरित की जाएंगी। यहां ध्यान देने योग्य एक और बात है कि सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों को निरीक्षण (रात्रि चौपालों में, कैंपों में) के लिए सरकार द्वारा वाहन भी उपलब्ध नहीं कराया गया है। इसके साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों को नियमानुसार कार्यालय अध्यक्ष भी घोषित नहीं किया गया है व छात्रावास अधीक्षक एसएसओ के नियंत्रण में नहीं है। पड़ताल में सामने आया कि एसएसओ के वर्तमान में 155 पद रिक्त हैं। विभाग द्वारा पिछले दो वर्षों से नई भर्ती भी नहीं की गई है। इसके अलावा एसएसओ ग्रेड भी अन्य ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की तुलना में कम है। विशेष बात यह है कि इन सभी समस्याओं का ज्ञापन मुख्यमंत्री व निदेशक महोदय के पास दो सितंबर को दिया जा चुका है। अभी भी स्थिति वही ढाक के तीन पात ही बनी हुई है। माही संदेश का सरकार से आग्रह है कि जल्द से जल्द इन समस्याओं का निराकरण किया जाए ताकि आम जनता को समय पर सुविधाएं मिलें क्योंकि सुविधाएं और तय समय पर कार्य होने पर ही उत्सव मना पाएगा आम आदमी।

वर्ष 2011-12 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने सामाजिक सुरक्षा अधिकारी पद का सृजन किया था जिसका उद्देश्य समाज के गरीब सुख-सुविधाओं वंचित असहाय एवं नि:शक्त लोगों को नजदीकी स्थान पर (पंचायत समिति स्तर पर) उनसे संबंधित सरकारी सुविधाओं का लाभ उपलब्ध कराना था।

लघु-कथाएं

सच्चा धर्म

'जच्चा और बच्चा दोनों की स्थिति बहुत ही नाजुक है। यदि तुरंत ए.बी. निगेटिव ब्लड ग्रुप की 300 एम.एल. ब्लड की व्यवस्था नहीं की गई तो दोनों की जान भी जा सकती है।'

डॉक्टर ने मानो सुनने वालों के कान में गरम लावा उड़ेल दिया हो। इस दुर्लभ ग्रूप के ब्लड का नाम सुनकर पंडित रामकिशन और उनके परिजनों का चिंतित होना स्वाभाविक था।

नमाज के लिए जा रहे वार्ड ब्वाय असलम के दोनों हाथ ऊपर उठ गए, 'या अल्लाह... ये कैसी मुसीबत में डाल दिया आपने। रमजान का महीना ऊपर से नमाज का वक्त...। क्या करूँ... ? ब्लड डोनेट करने से मुझे अपना रोजा तोड़ना पड़ेगा....। वरना दो मासूमों की जान...।'

उसे निर्णय लेने में देर नहीं लगी। बोला, 'डॉ. साहब, मेरा ब्लड ए.बी. निगेटिव है। मैं इन्हें ब्लड डोनेट करूँगा। चलिए, आप जल्दी से आप तैयारी कीजिए।'

'पर असलम तुम तो नमाज के लिए...'

'डॉक्टर साहब, आज यदि मैंने इन्हें ब्लड डोनेट नहीं किया, तो मेरा अल्लाह मुझे कभी मुआफ नहीं करेगा। चलिए, जल्दी कीजिए।'

डॉक्टर और असलम को ब्लड बैंक की ओर जाते पंडित रामकिशन और उनके परिजनों की आँखें नम हो गई थी।

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
रायपुर (छ.ग.)
pradeep.tbc.raipur@gmail.com

मातृत्व

'**देखो** मालती, मैं तुम्हारी गरीबों की मदद करने की प्रवृति का विरोधी नहीं हूँ। उन्हें खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने की चीजें देने, आर्थिक रूप से मदद करने तक तो ठीक है, पर ये कामवाली बाई के बच्चे को अपना दूध पिलाना... छी... छी... तुम ऐसा कैसे कर सकती है?'

'क्यों... इसमें बुरा क्या है ? कामवाली बाई की तबीयत ठीक नहीं है। उसे आज बिलकुल दूध नहीं आ रहा है। उसकी चार महीने की बच्ची भूख से बालक रही थी, मैंने अपना दूध पिला दिया, तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा। देखो, बच्ची कैसे चैन से सो गई।'

'पर...'

'क्या पर, यदि हमारी बेटी के साथ भी ऐसा होता, तो क्या आप कामवाली को दूध पिलाने से मना कर देते। कुछ ही महीने पहले आपने मुझे फेसबुक पर आया एक फोटो दिखाया था, जिसमें नन्हे-से बंदर को एक कुतिया अपना दूध पिला रही थी, तब तो आप माँ की ममता और मातृत्व पर बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे और आज छी... छी... कर रहे हो। मत भूलो कि मैं आपकी पत्नी होने के साथ-साथ एक माँ भी हूँ।'

वह अपनी पत्नी से नजर मिला कर बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

क्रमशः पृष्ठ 19 से

खुद को जीत लो फिर कुछ भी जीतना कठिन नही। अपनी कुछ पहले रही खराब आदतों को याद करते हुए गुप्ता कहते हैं कि आदतें बदलना कठिन अवश्य है नामुमकिन नहीं। आदत कोई सी भी हो अच्छी या बुरी याद रखने की बात यह है कि मालिक आप ही रहें, आदत को मालिक न बनने दें । संसार में आपकी सबसे बडी विरासत है अच्छी संतति लेकिन ध्यान रखने योग्य बात यह हैं कि बच्चे उपदेश से नहीं आचरण से सीखते हैं।

युवाओं को संदेश

रमेश चंद गुप्ता युवाओं के लिए कहते हैं कि हमेशा अपना 100 प्रतिशत दें, आप जो भी काम कर रहे हैं पूर्णतः एकाग्र हो लगन के साथ करें। सफलता के लिए बेसिक कंसेप्ट समझना अति महत्वपूर्ण हैं। काम को ही खेल बना लें। महत्वपूर्ण को प्राथमिकता दें। हमेशा जागृत रहें, वर्तमान में रहें, होश में रहें, सचेत रहें। एक बात हमेशा याद रखें कि इस जीवन में मुफ्त में कुछ भी नहीं मिलता। वो काम करें जो आपकी रुचि का हो, आपका वही काम आपको बहुत कुछ दे जाएगा। असफलता से कभी निराश न हो, धैर्य न खोएं। असफलता और कुछ नहीं सफलता का राज मार्ग है, बस इससे सबक लें और आगे बढ़ें। जीवन से बड़ा जीवन का कोई उद्देश्य नहीं। गुप्ता बुल्ले शाह का अमृत् वचन 'बुरे रस्ते कदी न जईयो चाहे कित्नी वी मंजिल दूर होवे' का स्मरण करते हुए युवाओं को आगाह करते हुए कहते हैं कि 'खुद को गंवा के इस संसार में बचाने जैसा कुछ भी नहीं।' महावीर स्वामी का कथन हमेशा याद रखें, 'जो चल पड़ा वो पहुँच गया' विश्वास रखें 'व्यक्ति जिस चीज के बारें में सोच सकता है, विश्वास कर सकता है उसे हासिल भी कर सकता है।

उत्सवधर्मी हम लोग

उत्सवधर्मी हम लोग सदा, उत्सव एक मनायेंगे।
ईश्वर ने हमें दिया जीवन, उसका लुत्फ उठायेंगे।
मानव बन धरा पर आये हैं, व्यर्थ नहीं होने देंगे।
जो डूब रहे गम के सागर में, उनको भी बाहर लायेंगे।
उत्सवधर्मी हम लोग सदा, उत्सव एक मनायेंगे।

गया दशहरा दीवाली आई, हम झूम झूम कर गाएंगे।
खुशियों के रङ्ग में सराबोर हो, हम जीवन को सरस् बनाएंगे।
दीवाली आने पर हम घर घर दीप जलाते हैं।
दीपों के द्वारा हम सब मिलकर तिमिर मिटाते हैं।
रंगों के उत्सव होली में हम, बैर मिटाते सबसे हैं।
और उन्हीं रंगों द्वारा हम पुनः एक हो जाते हैं।
उत्सवों ने हमको पाला है, हम भूल न सकते इसको हैं।
जीवन खुशियों का मेला है, हम इसे नहीं बिसराएंगे।
गया दशहरा आई दीवाली, हम झूम-झूम कर गायेंगे।

फैला रक्खा कुछ लोगों ने, जीवन तो विष का प्याला है।
रखती हमको बेहोश सदा, ऐसी इक कड़वी हाला है।
वो अनुचित व्याख्या करते हैं, जो नहीं जानते जीवन को।
उन्हें हमें समझाना है, जिसने भी भ्रम को पाला है।
फैला रक्खा कुछ लोगों ने, जीवन तो विष का प्याला है।

बालक के पैदा होते ही, खुशियां घर में छा जातीं हैं।
बुआ से लेकर दादी तक, सब मन ही मन हर्षाती हैं।
क्यों भूलें उस पल को हम, जिसके कई गवाह बनें।
उन यादों के उत्सव को, हम बार बार दुहरायेंगे।
उत्सवधर्मी हम लोग सदा, उत्सव एक मनायेंगे।

यह सच है जीवन के कुछ पल, पीड़ा हमको पहुँचाते हैं।
पर इंतजार में खुशियों के, हम लोग उन्हें बिसराते हैं।
गम को भी उत्सव हम समझे, ऐसा व्यक्तित्व हमारा है।
मौतें छलनी कर देतीं दिल को फिर भी न घबराते हैं
यह सच है जीवन के कुछ पल, पीड़ा हमको पहुँचाते हैं।

प्रेम दया करुणा को हर दिल में, हम उपजायेंगे।
हम मानव हैं, मानवता का उत्सव सदा मनाएंगे।
ईश्वर ने हमें दिया जीवन, उसका लुत्फ उठायेंगे।
उत्सवधर्मी हम लोग सदा, उत्सव एक मनायेंगे।।

अमलेन्दु शुक्ल
सिद्धार्थनगर उ.प्र.

...क्रमशः पृष्ठ 7 से

ये कौन हवाओं में ज़हर घोल रहा है
सब जानते हैं,कोई नहीं बोल रहा है
मर्दों की नज़र में तो वो कलयुग हो कि सतयुग
औरत के हँसी जिस्म का भूगोल रहा है
जो खुद को बचा ले गया दुनिया की हवस से
इस दौर में वह शख्स ही अनमोल रहा है

यह किताब वाणी प्रकाशन से छपी है और इसे अमेजन से मंगवाया जा सकता है। आप विपल्वी जी से उनके मोबाईल न 9794840901 पर बात कर बधाई दे सकते हैं।

वास्ता सीता का देके कहने लगे
इम्तिहानों से रिश्ते निखर जायेंगे
भूले भटके हुओं से कोई ये कहे
रहबरों से मिलेंगे तो मर जायेंगे
घर में रहने को कहता है कर्फ्यू मगर
जो हैं फुटपाथ पर किसके घर जायेंगे।

...क्रमशः पृष्ठ 8 से

विम्मो की आवाज ने फिर मुझे ख्यालों की दुनिया से बाहर निकाला वह अनवरत बोले जा रही थी उसे भी अपने मन का यह गुबार खाली करने की जल्दी थी। उसने शरारती सी मुस्कान के साथ फिर कहा 'यह बच्चे मेरी फीकी सी जिंदगी में चटपटी चटनी के जैसे आए और मेरी फीकी सी दुनिया को फिर से चटाकेदार बना दिया।'

'अपने बच्चे नहीं है तो क्या हुआ अब पूरी कॉलोनी के बच्चे मुझे मौसी कहते हैं। थोड़ी चटपटी, थोड़ी मीठी, कहीं नींबू सी खटास तो कहीं इमली की मिठास। अब मेरी जिंदगी की भेलपुरी में स्वाद की कोई कमी नहीं है।'

यह बोलकर वो खिलखिला कर हँसने लगी। विम्मो की जिंदगी का यह भेलपुरी वाला तर्क मुझे बहुत पसंद आया। उसकी जिंदगी में जिस चीज की कमी थी उसने उसी को दूसरे माध्यम से खोज कर अपने जीने का जरिया बना लिया था।

सही ही तो है अपनी जिंदगी अपने स्वाद अनुसार जिओ। दूसरे के स्वादानुसार तो खाना भी नहीं पसंद आता फिर जिंदगी तो अपनी हमजोली है। तो चलिए हम भी लग जाते हैं अपनी जिंदगी अपने स्वादानुसार ढालने में।

काव्य भी कह रहा जीवन है उत्सव

जीवन एक उत्सव है ।
प्रेम का, विषाद का।
रोष का, आह्लाद का ।
उल्लास के, तेज का ।
शोक के वेग का।
कुछ रुक के देखो ,
कुछ कल्पना,
कुछ वास्तव है।
जीवन एक उत्सव है।।
मोह है, राग है।
है दिवाली, फाग है।
राग, रंग, आक्रोश का,
बडा मधुर महोत्सव है।।
जीवन एक उत्सव है।।
साँझ है, धूप है।
लिए रंग खूब है।
इंद्रधनुष का रूप है।
डूबते सूरज मे भी,
अनोखा विभव है ।
जीवन एक उत्सव है।।

सुमति श्रीवास्तव
जौनपुर

शुभ, प्रकाशमयी, प्रफुल्लित
जीवन एक उत्सव है।
विविध रूप-रंगों में सुसज्जित
सुख-दुःख की छाँव में पल्लवित है।
मंगलमय अभिलाषाओं में खिलकर
अनुपम प्रेम से गुँजित हैं।
रिश्ते नाते के सुमधुर बंधनों में
अर्पित है, समर्पित हैं।
पर्वों के हर्ष-उल्लास में रोमांचित
उमंग-प्रफुल्ल उत्साहित हैं।
परिवर्तनशील ऋतुओं के भाँति
संदेश-नीर से सिंचित हैं।
बसंती पुष्पों के यौवन रस से
कुसुमित है, सुगन्धित हैं।
उत्कर्ष जीवन में प्रसन्नचित्त
उज्वल, पावन, प्रमुदित हैं।
अपार, निश्छल प्रेम का अनुरागी
जीवन उत्सव पुलकित हैं।
जीवन एक उत्सव है।

आरीनिता पांचाल
कोटा (राज.)

हरित वृक्षों पर लहरा रहे
परचम-से
फूलों सा जीवन
दर्पणों पर छाई
धूल के
बोलों सा जीवन
हर समय
खूशबू सा डोले
तितलियों के पंखों में
रंग घोले;
झील में, झरने में
अमृत रस ढोले
इंद्रधनुष की
लकीरों मे
रंग भरता
बादलों मे
छंद बुनता पंखियों-से
पर तौले जीवन
उत्सवों से
मन-झरोखा खोले जीवन।

डॉ. अखिलेश शर्मा
इन्दौर(म.प्र.)

जीवन को उत्सव के साथ जीयो

जीवन एक उत्सव है, जीवन को उत्सव के साथ जीयो
जीवन है पौधा गुलाब का, शाखा शाखा पर काँटे हैं
काँटे बिन है फूल अधूरा, जीवन का हर रंग अधूरा
जीवन कोई उलझन नहीं, तो क्यूँ उलझें इस बंधन में
यह जीवन एक, मृत्यु एक तो, क्यूँ न जीतें हम इस जीवन को
सूरज एक और चंदा एक, जीवन एक, बस रंग है अनेक
जीवन का सार है बस इतना सा, जीना है इसे इसी जीवन में
जीवन में फूलों का दम है, तो काँटे भी क्या कुछ कम हैं
काँटे ही जीवन में दुख सहना सिखलाते हैं,
काँटे ही जीवन में बढ़ने की राह दिखलाते हैं,
जब जीवन मिला है तो खुल कर जीयो
क्यूँ मुरझा रहें हम किसी गम में
यह यात्रा है चंद सालो की, जो हर दिन सीख सिखलाती है
कभी गम कभी खुशी, बस आगे बढ़ती जाती है
बस इन छोटी-लम्बी राहों को फतेह करना बाकी है
हर मुस्कुराते चेहरे में बस खुद की परछाईं देखना बाकी है,
एक छोटी सी तमन्ना है दिल की, जीवन भर मुस्कुराती रहूँ
बस रहूँ मैं जिन्दा अपनों के दिलों में
चाहे मेरी छोटी जिंदगानी हो।

मंजू रानी रस्तोगी
मेरठ (उ.प्र.)

जीवन एक उत्सव,
इसे क्षण-क्षण,
उत्सव कर जायें।
जीवन के लक्ष्य को,
अक्षय कर जायें।।

युगों-युगों से चल रही।
अनन्त अमर जीवन धारा को,
प्रेम से संचित कर।
नित-नित उत्सव हम मनायें।।

जीवन एक उत्सव,
इसे क्षण-क्षण,
उत्सव कर जायें।।

जीवन का संचार उत्सव।
मन का हर्षोल्लास उत्सव।
चेहरों का निखार उत्सव।
मेलजोल की बात उत्सव।
खुशियों का विस्तार उत्सव।
शुभता का संचार उत्सव।
प्रेम का आलाप उत्सव।
नव्यता का इंतजार उत्सव।

सोचियें....!
बिना उत्सव के.....?
सब बेकार हो जायेगा।
आस कहां रहेगी।
जीवन नीरसता से,
निराश हो जायेगा।।

आईये....!
एक उल्लास भर कर।
जीवन को,
हम उत्सव बनायें।
जीवन की,
जीवंत महिमा को,
नये-नये उत्सवों से भर जायें।।

प्रीति शर्मा 'असीम'
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

जीवन को उत्सव मानो तुम

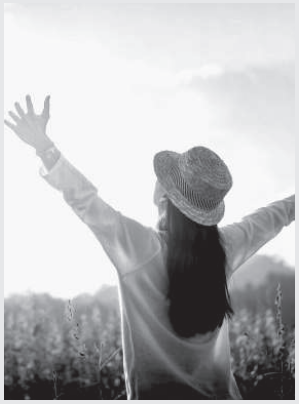

जीवन को उत्सव मानो तुम
और इसको भरपूर जीयो
किलकारी से भर लो दामन
मधु वाणी रस पान करो।

प्रीति जगत में फैलाकर तुम
नवरस का संचार करो
जीवन एक अनमोल रतन है
इस भव सागर को पार करो।
सत्यम, शिवम, सुन्दरम् है मन
इन मंत्रों का जाप करो
और वसुधैव कुटुम्ब बनाकर
जीवन नैया पार करो।
भूत भविष्यत् के सपनों में
वर्तमान ना भूलो तुम
आज, अभी के महाकुंभ से
अमृत गागर भर लो तुम।

जीवन को अभियान बनाकर
हिल मिल चलना सीखो तुम
प्यार बाँटते चलो जहाँ में
ऐसा जीवन जी लो तुम।

श्रीमती सुशीला शर्मा
जयपुर

समय कठिन
समस्याएँ विकराल
चिंता की लकीरों से
अटा है भाल
रो रो कर तेरी
आँखे हैं लाल
पर जीवन उत्सव की

खोज में तू
चिंताओं से मिलाले ताल
समस्याओं से लेकर पंगा
उनके घर में मचा दे दंगा

चिंता, डर, कठोरता का मोक्ष कर,
बहा तू अब निर्मल गंगा

मुश्किलों को बसंत समझ,
झाड़ दे सूखे पत्तों को।
राम बन भिड़जा रावण से,
मिटा असुरी झत्थों को।
पाले को पाल कर ही आती हैं
जीवन में हमारे बैशाखी।
उत्सव की फसलें लहराकर
पालों को बाँधती हैं राखी।
रक्तबीज पर टूट पड़ी वो
काली बनकर टूट पड़े।
करो प्रहार ना रूकना तब तक,
पत्थर से पानी ना फूट पड़े।
दस दौष के दस सिर पाकर,
रावण को मरना पड़ता हैं।
विजयदशमी के अंतिम प्रहार तक,
राम को लड़ना पड़ता हैं।
सदभाव का दीप जलाने,
आई देखो दीवाली।
प्रेमनीर से सींचे सबको,
ऊपर बैठा वो माली।
पाप घात और मक्कारी के
झूठे जालों में क्यों झूल रहा?
जीवन तो एक उत्सव है
क्यों इसे मनाना भूल रहा..
जीवन तो एक उत्सव हैं
क्यों इसे मनाना भूल रहा..।

शान्तिलाल सोनी
श्रीमाधोपुर (राजस्थान)

'आहें भरीं, पर शिकवे न किए'
कल्याणी बाई

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

सिनेमा के आकाश पर चमकते हजारों सितारों में कुछेक ऐसे भी होते हैं जो बहुत कम वक्त के लिए क्षितिज पर उदय होते हैं, अपनी चमक से लोगों का मन मोहते हैं और फिर चाहे-अनचाहे कारणों से किसी उल्का की तरह टूटकर गुमनामी के अंधेरे में खो जाते हैं। ...और फिर लोगों के जहन पर चढ़ती वक्त की धूल की परतों के नीचे दबकर वो चमक भी एक दिन सितारे की ही तरह कहीं अंधेरों में खो जाती है। जरीना उर्फ कल्याणी बाई गुजरे जमाने की एक ऐसी ही गायिका-अभिनेत्री थीं जिनके नाम का डंका तीस और चालीस के दशक में कोलकाता से लेकर लाहौर और मुंबई तक में बजता था और हरेक बड़ी फिल्म कंपनी उन्हें नौकरी पर रखने को लालायित रहती थी। कोलकाता की मशहूर कंपनी 'न्यू थिएटर्स' से फिल्मों में कदम रखने वाली उन्हीं कल्याणी बाई के आखिरी कई बरस घोर आर्थिक अभावों से जूझते हुए मुंबई के माहिम में और उसके बाद जोगेश्वरी (पश्चिम) में गुजरे थे।

दिल्ली के तुर्कमान गेट इलाके की रहने वाली कल्याणी बाई को बचपन से ही गाने का शौक था जिसके चलते उन्होंने बाकायदा उस्ताद वजीरे ख़ां से संगीत सीखना शुरू किया था। फिर वो जल्द ही ऑल इण्डिया रेडियो और एच.एम.वी. पर भी गाने लगीं। उनकी गाई ग़ज़लों, ख्याल और ठुमरी के उस जमाने में कई रेकॉर्ड बने थे। कुछ साल पहले माहिम (पश्चिम) की दरगाह वाली गली के 'टेकरीवाला बंगले' के कल्याणी बाई के घर पर हुई मुलाकात के दौरान उन्होंने बताया था कि बोलती फिल्मों का दौर शुरू होते ही साफ जुबान और सुरीला गाने वालों की मांग बढ़ गयी थी क्योंकि तब तक प्लेबैक चलन में आया नहीं था और कलाकारों को खुद ही कैमरे के सामने गाना पड़ता था। ऐसे में एक रोज कल्याणी बाई को किसी रिकॉर्डिंग में देखकर पंजाब से दो भाई उनके घर आ पहुंचे। वो दोनों कल्याणी को लेकर फिल्म बनाना चाहते थे। उन्होंने कल्याणी के अब्बा की तमाम शर्तें मंजूर कर ली थीं इसलिए अब्बा-अम्मी अपने सभी 15 बच्चों को साथ लेकर कोलकाता चले गए। ये वाक़या 30 के दशक के मध्य का है। उस वक़्त कल्याणी बाई की उम्र करीब 13 बरस की थी। कल्याणी के मुताबिक वो फिल्म 'परदेसी' आधी ही बन पायी थी कि दोनों भाईयों में झगड़ा हो गया और फिल्म बंद हो गयी। इस बात का पता चलते ही 'न्यू-थिएटर्स' के मालिक बी.एन.सरकार और संगीतकार आर. सी. बोराल ने कल्याणी को बुलाया और 250 रूपए महीने की पगार पर अपनी कंपनी में रख लिया। चूंकि उन्हें घर में सभी लोग 'कल्लो' कहकर बुलाते थे इसलिए आर.सी.बोराल ने ही उन्हें ज़रीना की

जगह नया नाम 'कल्याणी बाई' दिया था।

कल्याणी के मुताबिक उन्होंने न्यू थिएटर्स की साल 1937 में प्रदर्शित हुई चारों फिल्मों, 'अनाथ आश्रम', 'मुक्ति', 'प्रेसिडेंट' और 'विद्यापति' में पृथ्वीराज कपूर, त्रिलोक कपूर, उमाशशि, जगदीश सेठी, पी.सी. बरूआ, कानन देवी, पंकज मल्लिक, के.एल.सहगल, लीला देसाई, पहाड़ी सान्याल, के.सी.डे और के.एन.सिंह जैसे दिग्गजों के साथ अभिनय तो किया ही था, अपने लिए कुछ गीत भी गाए थे। इन गीतों में आर. सी. बोराल के संगीत में केदार शर्मा का लिखा फिल्म 'अनाथ आश्रम' का गीत 'पायल बाजे छनन सखी' उस जमाने में बेहद मशहूर हुआ था। इसी तरह से फिल्म 'मुक्ति' में पंकज मल्लिक द्वारा संगीतबद्ध किए और कल्याणी के गाए दो गीत, असगर हुसैन 'शोर' का लिखा 'हम बेकसों को पूछने वाला कोई नहीं' और 'प्रेम' का लिखा और पंकज मल्लिक के साथ गाया दोगाना 'दु:खभरे दु:खवाले, शराबी सोच न कर मतवाले' भी बेहद सराहे गए थे। कल्याणी के मुताबिक उस जमाने में प्लेबैक अपने शुरूआती दौर में था जिसकी शुरूआत 'न्यू थिएटर्स' की ही 1935 में बनी फिल्म 'धूप-छांव' से हुई थी। चूंकि अगले करीब डेढ़ दशक तक फिल्म के रेकॉर्ड्स पर बजाय असली गायक के, फिल्म के उस किरदार का नाम दिए जाने का चलन था, जिस पर वो गीत फिल्माया गया हो, इसलिए कल्याणी समेत उस दौर के तकरीबन सभी गायक-गायिकाओं के गाए कई गीतों की पुष्टि कर पाना आज संभव ही नहीं है।

कल्याणी के गायन और अभिनय से मुंबई स्थित 'रणजीत मूवीटोन' के मालिक सरदार चंदूलाल शाह इतने प्रभावित थे कि 'न्यू थिएटर्स' के साथ कल्याणी के कांट्रेक्ट के खत्म होते ही उन्होंने कल्याणी को 800 रूपए महिने पर मुंबई बुलवा लिया। साल 1937 में

रिचर्ड एटनबरो द्वारा बनाए गए 'गांधी वेलफेयर ट्रस्ट' से कल्याणी को हर महिने 750 रुपए की पेंशन मिलती थी लेकिन आर्थिक बदहाली से निजात उन्हें आखिरी वक्त तक नहीं मिली। तमाम मुश्किलों के बावजूद उनकी खुद्दारी ने किसी से भी 'शिकवे' करने की इजाजत उन्हें कभी नहीं दी।

प्रदर्शित हुई 'तूफानी टोली' रणजीत मूवीटोन के बैनर में कल्याणी की पहली फिल्म थी जिसके निर्देशक थे जयंत देसाई और संगीतकार थे ज्ञानदत्त। इसमें कल्याणी के तीन गीत थे, जिनमें प्यारेलाल संतोषी का लिखा सोलो था 'कोई आकर ये समझाए...' और आरजू लखनवी का लिखा दोगाना था 'छतियन धड़के अंखियन फड़के...', जो कल्याणी और कांतिलाल की आवाज़ों में था। प्यारेलाल संतोषी का ही लिखा एक अन्य गीत 'रानी रानी रानी आओ सुनाऊं मन की नगरी की तुमको एक कहानी...' कांतिलाल, कल्याणी और ई. बिलिमोरिया ने गाया था।

साल 1938 में कल्याणी ने रणजीत मूवीटोन के बैनर में बनी कुल 8 में से 4 फिल्मों 'बिल्ली', 'गोरख आया', 'पृथ्वीपुत्र' और 'सेक्रेट्री' में अभिनय के साथ-साथ गीत भी गाए। इन सभी फिल्मों के संगीतकार ज्ञानदत्त और गीतकार प्यारेलाल संतोषी थे। ये गीत थे, 'पा ली मैंने पा ली, गाड़ी पों पों वाली' ('बिल्ली'/कल्याणी और कांतिलाल), 'वो दिन गए हमारे, मैं थी छैल छबीली राधा' ('गोरख आया'/ कल्याणी और राजकुमारी), 'नारायण को भूल न जा रे' ('पृथ्वीपुत्र'/ कल्याणी) और 'कहां छुपा है चितचोर' और 'कौन राह तू जाए मुसाफिर' ('सेक्रेट्री' / कल्याणी)। साल 1939 में इसी बैनर की कुल प्रदर्शित 4 फिल्मों में से एक, 'नदी किनारे' में कल्याणी ने अभिनय के अलावा कांतिलाल के साथ मिलकर एक दोगाना 'वो दिल ही नहीं जिसमें न हो चाह किसी की' गाया था। साल 1940 में प्रदर्शित फिल्म 'आज का हिंदुस्तान' में कल्याणी ने सिर्फ अभिनय किया और फिर वो 'रणजीत मूवीटोन' से अलग हो गयीं। उधर साल 1939 में बनी निर्देशक डी.एन.मधोक की पंजाबी फिल्म 'मिर्ज़ा साहिबां' में उनका गाया गीत 'मेरा रब वे दिलां तो नेड़े...' भी काफी मशहूर हुआ था।

'रणजीत मूवीटोन' से अलग होने के बाद कल्याणी ने 'सुपर पिक्चर्स' की 'कन्यादान' (1940), 'मोहन पिक्चर्स' की 'जादुई कंगन' (1940), 'मुस्लिम का लाल' (1941) और 'जादुई अंगूठी' (1948), 'तरूण पिक्चर्स' की 'प्रभात' (1941), 'सनराईज पिक्चर्स' की 'घर की लाज' (1941), 'घर-संसार' (1942), 'मालन' (1942) और 'मां-बाप' (1944) और 'राधिका पिक्चर्स' की 'प्यारा वतन' (1942) जैसी कई फिल्मों में नायिका से लेकर खलनायिका तक के किरदार निभाने के साथ-साथ गीत भी गाए। उनके गाए कई गीत उस जमाने में बेहद मशहूर हुए थे, जैसे-'आ आ री निंदिया' और 'मन दुख से क्यूं घबराता है' ('प्रभात'-1941 / गीत : एहसान रिजवी / संगीत : शांति कुमार), 'जवानी जवानी सुंदर छब दिखलाए', 'दिल है तुम्हारी याद की दुनिया लिए हुए' और सहगायिका कौशल्या के साथ 'हम गाएं तुम नाचो' ('घर की लाज'-1941 / गीत : एहसान रिज़वी / संगीत : अन्नासाहब माईनकर), 'जी में ठनी है के हंस हंस के रूलाना होगा' और 'बादरवा बरसन को आए दिन दिन बीती जाए जवानी' ('घर संसार'-1942 / गीत : एहसान रिज़वी / संगीत : श्याम बाबू पाठक), 'श्याम न अब तक आए

सखी री' और 'ऐसे बेदर्द हो तुम जिसपे कोई ज़ोर नहीं' ('मालन'-1942 / गीत : एहसान रिज़वी / संगीत : श्याम बाबू पाठक), 'मिस्ल-ए-ख्याल आए थे आकर चले गए' ('आईना'-1944 / गीत : पंडित फानी / संगीत : गुलशन सूफी) और इन सबसे बढ़कर नूरजहां और जोहराबाई अंबालेवाली के साथ मिलकर गाई हिंदी सिनेमा के इतिहास की पहली कव्वाली 'आहें ना भरीं शिकवे ना किए' ('जीनत'-1945 / गीत : नख्शब / संगीत : हफ़ीज़ ख़ां) जिसमें श्यामा, शशिकला और शालिनी पहली बार परदे पर नजर आई थीं।

साल 1948 में शादी के बाद कल्याणी तमाम फिल्मी चकाचौंध से दूर होकर घर-गृहस्थी में जुट गयीं। फिर कई दशकों बाद उन्होंने 'आ जा सनम' (1975), 'प्रेम कहानी' (1975), 'आखिरी सजदा' (1977) और 'सलाम-ए-मुहब्बत' (1983) जैसी फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएं निभाईं लेकिन करियर का ये दूसरा दौर उन्हें रास नहीं आया और वो हमेशा के लिए फिल्मी दुनिया से किनारा करके खामोशी से बेटे-बहू, पोते-पोतियों के साथ ज़िंदगी गुजारने लगीं। उनके शौहर का इंतकाल बहुत पहले हो चुका था और बेटा फिल्मों में स्पॉट-ब्वाय का काम करके जैसे-तैसे घर चला रहा था। रिचर्ड एटनबरो द्वारा बनाए गए 'गांधी वेलफेयर ट्रस्ट' से कल्याणी को हर महिने 750 रूपए की पेंशन मिलती थी लेकिन आर्थिक बदहाली से निजात उन्हें आखिरी वक्त तक नहीं मिली। तमाम मुश्किलों के बावजूद उनकी खुद्दारी ने किसी से भी 'शिकवे' करने की इजाजत उन्हें कभी नहीं दी। उनकी खुद्दारी का ही नतीजा था कि देवआनंद और सुनील दत्त जैसे सुपरस्टार तक हमेशा उनके साथ बेहद अदब से पेश आते रहे। और फिर 1 अक्टूबर, 2009 को 86-87 साल की उम्र में अपने दौर की वो महान कलाकार इस दुनिया को अलविदा कह गयीं।

प्रकृति में प्रवृत्ति से पद्धति द्वारा परिष्कृति हेतु

अक्सर जीवन में कर्म करने से पहले फल की प्राप्ति का जो मोह है वही दु:ख और अनवरत चलने वाली पीड़ा का प्रमुख कारक बनता है। दूसरों से होड़ करना या श्रेष्ठ बनने की दौड़ आपको जीवन में आगे बढ़ने से रोकती है, अगर श्रेष्ठ बनना है तो पहले श्रेष्ठ का मतलब समझें। आप सबसे पहले अपने आपसे प्रतिस्पर्धा करें अगर आपने इस प्रतिस्पर्धा में खुद को परास्त कर दिया तो यकीन मानिए आपने जीवन के सबसे बड़े शत्रु पर विजय प्राप्त कर ली। किसी से होड़ मत करें बल्कि अगले इंसान की अच्छी आदतों को अपनाने की कोशिश करें कि उस शख्स में कौन सी अच्छी आदतें हैं जिन्हें हम अपना सकते हैं। अगर हम अच्छी आदतें ग्रहण करने लगें तो यकीन मानिए जीवन सुंदर बन जाएगा और जीवन के केन्द्र में फिर उत्सव होगा जहां प्रसन्नता और सदाचार का ही आवरण होगा। आइये आज केवल और केवल अपने अन्तस की खुद से बात करते हैं । मेरी अनुभूति अनुसार सिस्टम ही समय की रूपरेखा तय करता है। हर गतिविधि आनन्द पाने या आनन्द बढाने की और शीर्ष प्राणित है । दूसरे शब्दों में कहें तो विधाता ने सबको समानता के साथ श्रेयष्कर करने का मार्ग हमेशा प्रशस्त किया है।

अन्तत: और बेहतर प्रस्तुति ही याद रखने योग्य है कि उन्होने कुरीतियों अथवा समस्याओं का निराकरण खुद कैसे किया? वही हमारे लिये आदर्श बन कर जीवन का मार्गदर्शन करता आया है ।

अब जैसा कि आनन्द सर्वोपरि हेतु; साधन और साध्य दोनों है तब इसकी प्राप्ति के मायने क्या और कैसे जानना जरूरी हो जाता है ।

हम भारतवर्ष में गुरूकुल परम्परा के निर्वाहक ऋषि एवं तत्ववेत्ताओं को ज्ञानचक्षुओं के खोजी बनाकर उन्हें अधिकार केन्द्रित करते गये यह तत्कालीन आवश्यकता थी किन्तु उनके पिछलग्गू बने रहने की सहूलियतों ने कर्मकाण्डों की अभिवृद्धि की और मानव कल्याण तो जैसे खो ही गया। आज शार्टकट की अभिलिप्सा ने तो हर शुभता को प्रतीकों तक संकुचित कर दिया है । कटुता या आलोचना 10 प्रतिशत अच्छे परिष्कार ला सकती है लेकिन श्रेय अथवा क्रेडिट देने से कोई भी 110 प्रतिशत तक मोटिवेटेड हो सकता है । श्रेयदान भी आज टीमवर्क के रूप में प्रचलित है । अपने किये का परिणाम तो देर सवेर सभी को मिलना है मगर अपनी बेहतरी का श्रेय जरूरतमन्द या टीम को देना एक प्रायोजित प्रयास है और श्रीमदभागवत गीता में वैश्विक कल्याण का हेतु ईशोवाच उदघृत हुआ है कि सबकुछ उसको ही अर्पण करते हुए फल की आशा रखे बगैर कर्म करना ही श्रेयस्कर और करणीय दोनों हैं।

वंदना शर्मा
जयपुर
vandan482@aol.com

सफलतम एक वर्ष अब द्वितीय वर्ष का सफर है जारी...

अप्रेल, 2018

मई, 2018

जून, 2018

जुलाई, 2018

अगस्त, 2018

सितम्बर, 2018

अक्टूबर, 2018

नवम्बर, 2018

दिसम्बर, 2018

जनवरी, 2019

फरवरी, 2019

मार्च, 2019

अप्रेल, 2019

मई, 2019

जून, 2019

जुलाई, 2019

अगस्त, 2019

सितम्बर, 2019

बच्चों की रचनात्मकता पहचानें और निखारें, बच्चों द्वारा लिखी गई रचनाएं, बनाए गए चित्र आमंत्रित हैं साथ ही बच्चे बन सकते हैं अतिथि संपादक।

जल्द आ रहा है **माही संदेश** मासिक पत्रिका का **बाल विशेषांक**

अपनी रचनाएं फोटो व अपने पूर्ण पते के साथ
ईमेल करें : mahisandesh31@gmail.com
मोबाइल एंड व्हाट्सएप : 9887409303

जीवन से प्रेम करें उर्मिला गोस्वामी

रोहित कृष्ण नंदन

***कहते** हैं न कि हर मुलाकात में कुछ न कुछ अच्छा छिपा रहता है, जयपुर शहर की प्रेरणादायक शख्सियत नीरज गोस्वामी जी के घर राजकुमार शर्मा जी योगिता शर्मा जी, माला रोहित कृष्ण नंदन के साथ सार्थक संवाद चल रहा था, तभी कमरे में मंद-मंद मुस्कान बिखेरती हुई उर्मिला गोस्वामी जी आईं जिन्हें मैं अब दादी मां के रूप में आवाज देता हूं, नब्बे वर्ष की आयु में भी जीवन में इतनी सक्रियता, चेहरे पर ओज भरी आभा, सच में उनको देखते ही लगा वाकई में अगर ज़िंदगी ढ़ंग से जीयी जाए तो यह उत्सव बन जाती है और माही संदेश के अक्टूबर अंक 'जीवन एक उत्सव' में हमें जीवन का उत्सव मनाता जीता-जागता किरदार दादी मां के रूप में मिल गया। फिर कुछ दिन बाद सहयोगी साथी नवीन कानूनगो के साथ दादी मां उर्मिला गोस्वामी जी का साक्षात्कार करने का अवसर मिला।*

बचपन के दिन

दादी मां उर्मिला गोस्वामी का जन्म 20 दिसंबर 1929 को जम्मू में हुआ। इनके पिताजी स्व. महेन्द्र भारद्वाज व मां स्व. चंदन देवी की यह चौथी संतान थीं। पिता रेलवे में इंजीनियर अधिकारी के पद पर बंटवारे से पहले के पाकिस्तान में कार्यरत थे। बचपन से दादी मां उर्मिला न केवल पढ़ाई में मेधावी थीं बल्कि सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, गोटा लगाने आदि में पारंगत थी। तब के समय में अधिकांश रूप में गुरुकुल के माध्यम ये पढ़ाई होती थी। हाईस्कूल पास करने के बाद इन्हें आगे पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप भी मिली।

जब बढ़े कदम

पढ़ाई का दौर जारी ही था कि फरवरी 1949 में पठानकोट में उर्मिला गोस्वामी जी की शादी प्रकाश देव गोस्वामी जी से हो गई। उर्मिला गोस्वामी जी के पति उस समय राजस्थान के चूरू क्षेत्र में अध्यापक के पद पर कार्यरत थे। 14 अगस्त 1950 को इनकी पहली संतान नीरज गोस्वामी जी का जन्म हुआ। इसके बाद वर्ष 1951 में चूरू में ही सरकारी स्कूल में अध्यापक के रूप में नौकरी लगी और बच्चों को पढ़ाने लगीं। इसके बाद वर्ष 1955 में जयपुर से एसटीसी की ट्रेनिंग की, यहां जयपुर में किराए के मकान में रहने लगे इसके बाद वर्ष 1962 में जयपुर में स्वयं का घर बनवाया। इसके बाद वर्ष 1964 में राजस्थान से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की, फिर वर्ष 1966 में इतिहास में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। इसके बाद इन्होंने जयपुर से ही बी.एड किया। जयपुर स्थित आदर्श नगर सरकारी विद्यालय से वर्ष 1989 में सेवानिवृत्त हुईं।

बागबानी करने के शौक के साथ-साथ सुबह की चाय के बाद अखबार व पत्रिकाओं में आई वर्ग पहेली तथा Sudoku भरने के बाद ही इनके दिन की शुरुआत होती है। खास बात यह है कि इस उम्र में इनके 32 दांत एक दम सही सलामत हैं, कभी दांतों की तकलीफ इन्हें नहीं हुई, आज भी गन्ना चूसने को मिल जाए तो ये छोड़ती नहीं हैं। हर तरह के खाने की शौकीन हैं फिर चाहे पिज्जा, पास्ता हो या दाल बाटी चूरमा, मीठे में गुलाबजामुन इनकी कमजोरी है।

जीवन है उत्सव इसे जी भर जियो

दादी मां उर्मिला गोस्वामी कहती हैं कि आज मुझे अपनी सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हुए तीस वर्ष हो गए हैं, मैं आज भी अपनी दिनचर्या वही रखती हूं जो तीस वर्ष पहले रखती थी। मैं तो इस जीवन से बहुत खुश हूं, सुबह भगवान को हाथ जोड़ती हूं कि दुनिया के सभी बच्चे स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहें, इसके बाद मैं मेरे बच्चों के लिए भगवान से प्रार्थना करती हूं। मैंने ज़िंदगी में कभी किसी से नफरत नहीं की। दादी मां के बड़े बेटे नीरज गोस्वामी जी बताते हैं कि आज भी मां परिवार के हर सदस्य से प्रतिदिन बात करती हैं। तकरीबन बीस वर्ष पहले पथरी की समस्या के कारण ऑपरेशन कर गॉल ब्लेडर हटाया गया, इसके बाद वर्ष 2016 में इनके घुटने ट्रांसप्लांट किए गए, मां का हर काम घड़ी की सुई देखकर चलता है, प्रतिदिन सुबह शाम योग के साथ साथ नियमित रूप से पार्क में घूमने जाती हैं जहां मां का मोस्ट सीनियर सिटीजन का भी एक ग्रुप बना हुआ है जिसमें उनकी हमउम्र लगभग बीस से पच्चीस महिलाएं शामिल हैं। आज भी थिएटर में फिल्में देखती हैं और घर पर कौन बनेगा करोड़पति देखकर सोने जाती हैं। दादी मां को चंद्रगुप्त व चाणक्य आदि व्यक्तित्वों पर बने ऐतिहासिक सीरियल्स बहुत पसंद हैं।

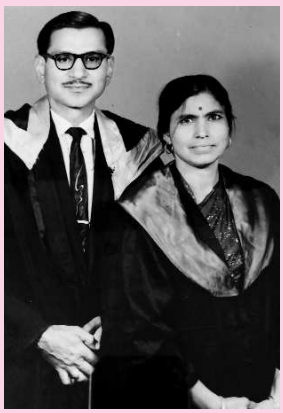

सैकड़ों फिल्मी गीत, गज़ल, कबीर के दोहे हैं याद

बातचीत के दौरान दादी मां ने बताया कि छह-सात वर्ष की उम्र से मुझे गाने का बेहद शौक था जो कि आज भी जारी है। गाने के साथ-साथ यह पंजाबी ढोलक भी बेहद सुंदर तरीके से बजाती हैं। बातचीत के दौरान उन्होंने अपनी सुमधुर आवाज़ में फिल्मी गीत वो जब याद आए बहुत याद आए, गज़ल 'दिल में इक लहर उठी है अभी' व कबीर के दोहे भी सुनाए।

तस्वीरों में भरती हैं आज भी रंग

तस्वीरों में रंग भरने की सुंदर कला वाकई में मन को मोह लेती है। दादी मां ने मुलाकात के दौरान स्वयं द्वारा रंग भरी गई कई पिक्चर नोटबुक हमें दिखाई, इन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी प्रोफेशनल चित्रकार ने अपनी तस्वीर में रंग भरे हैं।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

RAGHU SINHA MALA MATHUR CHARITY TRUST

Regd. Office : "Malarpan", 2, Sardar Patel Marg, Jaipur-302001
Phone : 91-0141-2374333 Mobile : +91 - 98290 58860
E-mail : mathursudhmat@yahoo.co.in

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर
के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-
302021 (राजस्थान)। मो. 9887409303

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कॉति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**